A Hindi story by an anonymous story lover
Caution: Close Incest, oral, anal, group, lesbian, gay, dirty talk

दीदी की ससुराल

"बेटा, नीलिमा की याद आ रही है, वो भी रहती थी तो बड़ा मजा आता था चुदाई में" मां ने चूतड़ उछालते हुए कहा.

मैं मां पर चढ़ कर चोद रहा था. मां की चूची मुंह से निकाल कर मैंने कहा "अम्मा, तू क्यों परेशान हो रही है, दीदी मस्त चुदवा रही होगी जीजाजी से"

"अरे शादी को तीन महने हो गये घर नहीं आयी, पास के शहर में घर है फ़िर भी फ़ोन तक नहीं करती, मैं करती हूं तो दो मिनिट बात करके रख देती है. आ ऽ ह ऽ बेटे, मस्त चोद रहा है तू, जरा गहरा पेल अब, मेरी बच्चेदानी तक, हां ऽ ऐसे ही मेरे लाल" मां कराहते हुए बोली.

मैं झड़ने को आ गया था पर मां को झड़ाने के पहले झड़ता तो वो नाराज हो जाती. उसकी आदत ही थी घंटों चुदाने की. और खास कर गहरा चुदवाने की, जिससे लंड उसकी बच्चेदानी पर चोट करे! मैं और कस कर धक्के लगाने लगा. "ले मेरी प्यारी अम्मा, ऐसे लगाऊं? कि और जोर से? और जोर से चुदवाना हो तो घोड़ी बन जा ऽ. पीछे से चोद देता हूं"

"अरे ऐसे ही ठीक है, अब अच्छा चोद रहा है तू, कल तो चोदा था तूने पीछे से और फ़िर गांड मार ली थी, मैं मना कर रही थी फ़िर भी, जबरदस्ती! अब तक दुख रही है" मां मुझे बांहों में भींच कर और जोर से कमर हिलाते हुए बोली. "हां तो मैं नीलिमा के बारे में ..."

मुझे तैश आ गया. नीलिमा दीदी के बारे में मैं अभी नहीं सुनना चाहता था. अपने मुंह से मैंने मां का मुंह बंद किया और चूसते हुए ऐसे चोदा कि दो मिनिट में झड़ कर मचलने लगी. यहां उसने मेरी पीठ पर अपने नाखून गड़ाये, जैसा वह झड़ते समय करती थी, वहां मैं भी आखरी का धक्का लगाकर झड़ गया. फ़िर उसके ऊपर पड़ा पड़ा आराम करने लगा.

सुस्ताने के बाद उठ कर बोला "अब बोलो अम्मा, क्या बात है? चोदते समय दीदी की याद न दिलाया कर. झड़ने को आ जाता हूं, खास कर जब याद आता है कि कैसे वो तेरी चूत चूसती थी और मैं उसकी गांड मारता था"

"हां, मेरी बच्ची को गांड मरवाने का बहुत शौक है. याद है कैसे तू उसकी गांड में लंड डाल कर सोफ़े पर बैठ कर नीचे से उसकी मारता था और मैं सामने बैठ कर उसकी बुर चाटती थी. हाय बेटे, न जाने वो दिन कब आयेगा जब मेरी बेटी फ़िर मैके आयेगी अपनी अम्मा और छोटे भाई की प्यास बुझाने. तू जाकर क्यों नहीं देख आता बात क्या है? जमे तो ले ही आ एक हफ़्ते को" अम्मा टांगें फ़ैलाकर अपनी चूत तौलिये से पोंछते हुए बोली.

"ठीक है अम्मा, कल चला जाता हूं. बिन बताये जाऊंगा, पता तो चले कि माजरा क्या है" मां की चूंची दबाते हुए मैं बोला.

मेरी अम्मा चालीस साल की है. घर में बस मैं, मां और मेरी बड़ी बहन नीलिमा हैं. मेरी उमर सोलह साल की है. दीदी मुझसे पांच साल बड़ी है. अम्मा और दीदी का लेस्बियन इश्क चलता है ये मुझे दो साल पहले मालूम हुआ. उसके पहले से मैं दोनों को अलग अलग चोदता था. बल्कि वे मुझे चोदती थीं ये कहना बेहतर होगा.

(c) 2008, www.antarvasna.com

उसके बाद हम साथ चोदने लगे. यह अलग कहानी है, बाद में कभी बताऊंगा.

दीदी की शादी तीन माह पहले हुई. हमें छोड़ कर जाने को वो तैयार नहीं थी. पर हमने मनाया, ऐसा अच्छा घर फ़िर नहीं मिलेगा. अच्छा धनवान परिवार, घर में सिर्फ़ जीजाजी याने दीपक, उनके बड़े भाई रजत और सास. दीपक था भी हैंडसम नौजवान. और शादी तो करना ही थी, सब रिश्तेदार बार बार पूछते थे, उन्हें क्या जवाब दें! अम्मा ने भी समझाया कि पास ही ससुराल है, हर महने आ जाया कर चोदने को.

दीदी ने आखिर मान लिया पर बोली कि वो तो हर महने आयेगी, अगर मां और छोटे भैया से नहीं चुदाया तो पागल हो जायेगी, हमारे बिना वह रह नहीं सकती थी. इसीलिये जब तीन महने दीदी नहीं आयी तो मां का माथा ठनका कि उसकी प्यारी बच्ची सकुशल है या नहीं.

दूसरे दिन मैं दोपहर को निकला. जाने के पहले मां की गांड मारने का मूड था. वो तैयार नहीं हो रही थी. मुझसे सैकड़ों बार मरा चुकी है फ़िर भी हर बार नखरा करती है. कहती है कि दुखता है. सब झूठ है, उसकी अब इतनी मुलायम हो गयी है कि लंड आराम से जाता है, तेल बिना लगाये भी. पर नखरे में उसे मजा आता है. गांड मराने में भी उसे आनंद आता है पर कभी मेरे सामने स्वीकार नहीं करती. दीदी ने मुझे अकेले में बताया था. इसलिये अब मैं उसकी किरकिर की परवाह नहीं करता.

जाने की पूरी तैयारी करके कपड़े पहनने के बाद मैंने मां की मारी. सोचा – कम से कम आज का तो सामान हो जाये, फ़िर तो मुठ्ठ ही मारना है दो तीन दिन. दीदी के ससुराल में तो भीगी बिल्ली जैसे रहना पड़ेगा. बेडरूम से मां को आवाज दी "मां मैं चला"

मां आयी तो उसे पकड़कर मैंने दीवाल से सटा कर उसकी साड़ी उठायी और लंड ज़िप से निकाला और उसके गोरे चूतड़ों के बीच गाड़ दिया. फ़िर कस के दस मिनिट उसे दीवाल पर दबा कर हचक हचक कर उसकी मारी.

वो भी नखरा करके "हाय बेटे, मत मार, बहुत दुखता है, मारना ही है तो धीरे मार मेरे बच्चे" कहती रही. पर मेरे झड़ने के बाद पलट कर साड़ी उठाकर बोली "जाने से पहले चूस दे मेरे लाल, अब दो दिन उपवास है मेरा"

मां भी क्या चुदैल है, दो मिनिट पहले दर्द से बिलख रही थी, पर चूत ऐसे बह रही थी जैसे नई नवेली दुल्हन हो. शायद जानबूझ कर दर्द का बहाना करती है, जानती है कि इससे मैं और मचल जाता हूं और जोर से गांड मारता हूं.

मां की बुर का पानी चाट कर मैंने मुंह पोंछा और फ़िर कपड़े ठीक करके निकल पड़ा. मां को वादा किया कि फ़ोन करूंगा और हो सके तो नीलिमा दीदी को साथ ले आऊंगा.

दीदी के घर पहुंचा तो शाम हो गयी थी. दीदी की सास अचलाजीने दरवाजा खोला. मेरा स्वागत करते हुए बोलीं. "आओ विनय बेटे, आखिर याद आ गयी दीदी की. मैं सोच ही रही थी कि कैसे अब तक कोई नीलिमा बिटिया के घर से देखने नहीं आया. वैसे तुम्हारी दीदी बहुत खुश है. मैंने कई बार कहा फ़ोन कर ले पर अनसुना कर देती है"

मैंने उनके पांव छुए, एकदम गोरे पांव थे उनके. "मांजी, आपके यहां दीदी खुश नहीं होगी तो कहां होगी. मैं तो बस इस तरफ़ आ रहा था इसलिये मिलने चला आया"

मांजी ने मुझे चाय पिलायी. बातें करने लगी. मां के बारे में पूछा कि सकुशल हैं ना. मैंने कहा कि दीदी नहीं दिख रही है, बाहर गयी होगी शायद तो अचलाजी बोलीं कि दीदी अभी आ जायेगी, ऊपर सो रही है. रजत आफ़िस से अभी आया नहीं है. आगे मुझे बोलीं कि आये हो तो अब दो दिन रहो. मैंने हां कर दी.

(c) 2008, www.antarvasna.com

मैं उन्हें गौर से देख रहा था. अचलाजी मां से सात आठ साल बड़ी थीं, सैंतालीस अड़तालीस के आसपास की होंगी. गोरी चिकनी थीं, खाया पिया भारी भरकम मांसल बदन था, यह मोटापा भी उन्हें एकदम जच रहा था. पर साड़ी और घूंघट में और कुछ दिख नहीं रहा था. चेहरा हसमुख और सुंदर था. जब से मैं मां को चोदने लगा हूं, उसकी उमर की हर औरत को ऐसे ही देखता हूं. सोचने लगा कि दीदी की सास भी माल हैं, इतनी उमर में भी पूरा जोबन सजाये हुए हैं. पर चांस मिलना कठिन ही है, कुछ करना भी ठीक नहीं है, आखिर दीदी की ससुराल है, लेने के देने न पड़ जायें.

थोड़ी देर से दीदी के जेठ, जीजाजी के बड़े भाई रतन नीचे आये. अठ्ठाईस उनतीस के आसपास उमर होगी. अच्छा कसा हुआ शरीर था. उन्होंने शादी नहीं की थी, खुद का बिज़िनेस करते थे. अभी थोड़ा पसीना पसीना थे, हांफ़ रहे थे. मुझसे हाथ मिलाया और बोले कि ऊपर वर्जिश कर रहा था. शाम को ही समय मिलता है, एक्सरसाइज़ करने का. अचलाजी उनकी ओर देखकर मुस्करा रही थीं.

कुछ देर बाद दीदी नीचे आयी. मैं देखता रह गया. क्या सुंदर लग रही थी. थोड़ी मोटी हो गयी थी, नहीं तो हमारी दीदी एकदम छरहरी है, मां जैसी. बस मम्मे मोटे हैं, मां से थोड़े बड़े. मेरी तो अच्छी पहचान के हैं उसके मम्मे, कितनी बार चूसा और दबाया है उनको.

दीदी भी थकी लग रही थी. लगता नहीं था कि सो कर आयी है, पर एकदम खुश थी. मैंने सोचा कि घर का पूरा काम करना पड़ता होगा. अब क्या करें, ससुराल में सब औरतें करती हैं. पर खुश तो है, कम से कम कोई तकलीफ़ नहीं देता यह साफ़ है. मैंने शिकायत की कि इतनी भी क्या रम गयी ससुराल में कि भाई और मां को भूल गयी. थोड़ी देर की नोक झोक और हंसी मजाक के बाद अचलाजी ने कहा "नीलिमा बेटी, विनय को ऊपर ले जा, वो पास वाला कमरा दे दे."

मैं सामान उठा कर दीदी के साथ ऊपर गया. आलीशान घर था. चार पांच बड़े बड़े कमरे थे. दीदी ने मेरा कमरा दिखाया. जाने लगी तो मैंने हाथ पकड़कर बिठा लिया. "क्या दीदी, बैठो, जरा हाल चाल सुनाओ." उसे देखकर मेरा लंड खड़ा हो गया था. लगता था नीलिमा दीदी की अभी मार लूं, उसका अधिकतर वजन जो बढ़ा था वह छाती पर और कूल्हों पर बढ़ा था इसलिये उसकी गांड साड़ी में भी मतवाली लग रही थी.

दीदी बैठ गयी. बातें करने लगी. मैंने उलाहना दिया कि घर क्यों नहीं आयी, कम से कम फ़ोन तो क्या होता तो बोली "अरे विनय, यहां इतनी उलझी हूं कि घर आने का समय ही नहीं मिला. पर चिंता न कर, बहुत खुश हूं"

मेरा लंड खड़ा हो गया था, पैंट में तंबू बना रहा था. दीदी को दिखाकर धीरे से बोला "देख दीदी क्या हालत है तुझे देख कर. मां की भी बुर पसीज जाती है तुझे याद करके. तेरी चुदाई कैसे चल रही है?"

वह आंख मार कर इशारे से बोली बहुत मस्त. मैंने हाथ बढ़ाकर उसकी चूंची दबा दी. "दीदी मेरे साथ चलो हफ़्ते के लिये, नहीं तो यहां कुछ चांस दो, तुम्हारी बुर का स्वाद याद आता है तो मुंह में पानी भर आता है"

वो हंसकर बात टालकर बाहर चली गयी. "देखूंगी, अभी जाने दो, नीचे मांजी इंतजार कर रही होंगी, खाना बनाना है"

रात को खाना खाते समय सब गप्पें मार रहे थे. जीजाजी भी आ गये थे. अच्छे हैंडसम पचीस साल के नौजवान हैं, काफ़ी छरहरा नाजुक किस्म का बदन है, लगता नहीं कि रतनजी, उनके बड़े भाई होंगे, उनका शरीर तो एकदम कसा हुआ गठा हुआ है.

सब गप्पें मारते हुए एक दूसरे की ओर देखकर बीच बीच में मुस्करा रहे थे. खास कर अचलाजी तो एकदम प्रसन्न

(c) 2008, www.antarvasna.com

लग रही थीं. मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था. माना कि उनकी बहू का भाई आया है पर इसमें इतना खुश होने की क्या बात है! मेरे चेहरे के भाव देखकर वे बोलीं. "बेटे, आज सब खुश हैं क्योंकि तेरी दीदी इतनी खुश है, आखिर उसका छोटा भाई आया है मैके से." दीदी को देखा तो वह आंखें नीचे करके शरारत से मुस्करा रही थी.

रात को दस बजे ही सब सोने चले गये. मैं भी अपने कमरे में आ गया. जिस तरह से जीजाजी दीदी को देख रहे थे, जरूर चुदाई के लिये आतुर थे. मेरा खड़ा था. मां की याद आ रही थी. यह भी कल्पना कर रहा था कि जीजाजी कैसे दीदी पर चढ़े होंगे. सिर्फ़ चोदते हैं कि गांड भी मारते हैं?

तरह तरह की कल्पना करते हुए मैं बीस पचीस मिनिट लंड से खेला और मजा लिया, फ़िर सहन न होने पर मुठ्ठ मारने वाला था तभी पास के दीदी के कमरे से हंसने खिलखिलाने की आवाज आयी तो मन न माना. चुपचाप बाहर आ गया. दीदी के कमरे के अंदर बत्ती जल रही थी. मैं झुक कर कीहोल से देखने लगा. धक्के से दरवाजा जरा सा खुल गया, दीदी ने अंदर से ठीक से बंद भी नहीं किया था इसीलिये आवाज बाहर आ रही थी. मैं अंधेरे में खड़ा होकर अंदर देखने लगा. जो देखा तो हक्का बक्का हो गया.

अंदर जीजाजी और उनके भाई रतनजी दीदी पर एक साथ चढ़े थे. रतनजी दीदी को चोद रहे थे. उनका लंड सपासप दीदी की चूत में अंदर बाहर हो रहा था. जीजाजी दीदी की चूंचियां मसलते हुए उसे चूम रहे थे और गुदगुदी कर रहे थे. दीदी हंस रही थी, बीच में जीजाजी जोर से उसकी चूंची मसल देते तो दीदी सीत्कार उठती. "अरे कैसे बेदर्दी हो जी, जेठजी देखो मुझे कैसे प्यार से चोद रहे हैं, तुम भी जरा प्यार से नहीं दब सकते मेरी चूंची?"

जीजाजी बोले "ठहर हरामन, अभी मजा ले रही है, अब थोड़ी देर में जब रतन गांड मारेगा तो रो पड़ेगी साली, भैया आज इसकी गांड फ़ाड़ ही देना."

रतनजी बोले "नीलिमा रानी, बोल, निकाल लूं लौड़ा और डाल दूं गांड में?"

दीदी बोली "अरे नहीं मेरे भड़वे जेठजी, पूरा चोद कर निकालना साले, नहीं तो कल से चोदने नहीं दूंगी. और आप क्या मेरी गांड फ़ाड़ोगे, आप को तो पूरा मैं गांड में घुसेड़ लूं, किसी को नजर नहीं आओगे. और तुम मेरे चोदू राजा, क्या सूखे सूखे चूंची दबा रहे हो, जरा लंड चुसवाओ तो मजा आये!"

जीजाजीने लंड दीदी के मुंह में पेल दिया और उसका सिर पकड़कर मुंह में ही चोदने लगे. उधर जेठजी ने चोदने की स्पीड बढ़ा दी. जीजाजी की झाटें शेव की हुई थीं, एकदम बच्चे जैसा चिकना पेट था. जेठजी की अच्छी घनी थीं, मेरी तरह.

मेरा बुरा हाल था. लंड ऐसा फ़नफ़ना रहा था कि लगता था कि मुठ्ठ मार लूं. उन तीन नंगे बदनों की चुदाई देखकर मन आपे से बाहर हो रहा था. दो जवान हैंडसम मर्द और मेरी चुदैल खूबसूरत बहन. और क्या गाली गलौज कर रहे थे! उनकी बातों का मजा ही और था. मां और मैं चोदते समय कभी गाली नहीं देते थे!

अब दीदी मस्ती में मछली जैसी छटपटा रही थी. रतनजी ने अचनक लंड चूत से बाहर खींच लिया "छोटे, तेरी ये चुदैल रंडी आज बहुत किकिया रही है, शायद भाई के आने से खुश है. चल साली का कचूमर बना दें आज, मैं गांड मारता हूं, तू चोद, देखना कैसे मस्ती उतरती है इस भोसड़ीवाली की, कल भाई के सामने लंगड़ा लंगड़ा कर चलेगी तो समझ में आयेगा"

जीजाजी ने लंड दीदी के मुंह से निकाला और उसकी चूत में पेल दिया. दीदी झल्ला उठी "साले मादरचोद, चूसने भी नहीं दिया, ओ जेठ जी, आप ही लंड चुसवा लो. कि अब भी मेरी गांड में घुसना चाहते हो माल की

(c) 2008, www.antarvasna.com

तलाश में? और भोसड़ीवाली होगी तेरी अम्मा, मेरी तो जवान टाइट चूत है!"

जीजाजी पलट कर नीचे हो गये और दीदी को ऊपर कर लिया. दीदी की चूत में उनका लंड घुसा हुआ था. दीदी की भारी भरकम गांड भी अब मुझे साफ़ दिखी. पहले जैसी ही गोरी थी पर और मोटी हो गयी थी. रतनजी ने तुरंत लंड अंदर डाल दिया, एक धक्के में आधा गाड़ दिया. "अरे मार डाला ऽ रे ऽ , फ़ाड़ दोगे क्या साले हरामी? तेल भी नहीं लगाया" दीदी ने गाली दी.

बिना उसकी बात की परवाह किये रतनजी ने लंड पूरा अंदर पेल दिया, फ़िर दीदी के ऊपर चढ़ कर उसकी गांड मारने लगे. "भैया, इसकी चूंचियां पकड़ कर गांड मारो, साली के मम्मे मसल दो, पिलपिले कर दो, बहुत नाटक करती है ये आजकल." जीजाजी ने कहा और रतनजी ने दीदी की चूंचियां ऐसे मसलीं कि वो चीख उठी "अरे मर गयी ऽ रे ऽ , ये दोनों मादरचोद की औलाद आज मुझे मार डालेंगे, कोई बचाओ ऽ "

जीजाजी ने उसका मुंह अपने मुंह से बंद कर दिया और फ़िर दोनों भाई उछल उछल कर मेरी बहन को आगे पीछे से चोदने लगे. उसके शरीर को वो ऐसे मसल रहे थे जैसे कोई खेल की गुड़िया हो. पलंग पर लोट पोट होते हुए वे दीदी को चोद रहे थे. कभी जीजाजी ऊपर होते कभी जेठजी.

दीदी की दबी दबी चीखें सुनकर मुझे बीच में लगा कि बेचारी दीदी की सच में हालत खराब है, बचाया जाये क्या अंदर जा कर, पर मुझे बहुत मजा आ रहा था. क्या चुद रही थी दीदी, किसी रंडी जैसी आगे पीछे से! एक बार जब जीजाजी का मुंह दीदी के मुंह से हटा तो वह मस्ती में चिल्लाने लगी "चोदो सालो, गांडुओ चोद डालो, मेरी गांड का भुरता बना दो, मां कसम क्या मजा आ रहा है"

याने मेरी दीदी भी उतनी ही चुदैल थी जितने ये दोनों चोदू! मैं जोश में न जाने क्या करता, मुठ्ठ तो जरूर मार लेता पर पीछे से किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया. चौंक कर मैंने मुड़ कर देखा तो मांजी थीं. अंधेरे में न जाने मेरे पीछे कब आकर खड़ी हो गयी थीं. मैं सकते में आ गया. समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहूं, क्या सफ़ाई दूं, पर उन्होंने मुझे चुप रहने का इशारा किया और हाथ पकड़कर एक कमरे में ले गयीं. दरवाजा बंद किया. वो उन्हीं का बेडरूम था.

"तो विनय बेटा, पसंद आया मेरे बेटों का खेल?" उन्होंने पूछा. वे एक गाउन पहने थीं. गाउन में से उनकी मोटी मोटी लटकती चूचियों का आकार दिख रहा था. पेट भी कुछ निकला हुआ था. आखिर इस उमर में औरतों का होता ही है, मां का भी थोड़ा बहुत है. हां मां का बाकी बदन वैसे काफ़ी छरहरा है, अचलाजी की तुलना में तो वह बच्ची लगेगी.

मेरा कस कर खड़ा था. कुछ कुछ समझ में आ रहा था दीदी के घर न आने का राज़. अचलाजी ने मेरा हाथ पकड़कर पलंग पर बिठा दिया, आगे बोलीं. "अरे शाम को तू जब आया था तो असल में रतन तेरी दीदी को चोद रहा था. क्या छिनाल लड़की है, दिन रात चुदवाती है फ़िर भी मन नहीं भरता उसका. सुबह रजत चोद कर जाता है, दिन में उसका बड़ा भाई रतन चोदता है, रात को दोनों से चुदवाती है तब सो पाती है, वैसे मायके में भी वो खुश थी, मुझे बता रही थी कि उसकी मां और भाई उसे कितना प्यार करते हैं"

मैं थोड़ा शरमा गया कि घर की बात यहां पता चल गयी! "अरे शरमाता क्यों है, तू भी तो अच्छा खासा चोदू है, सोलह साल का है फ़िर भी माहिर है, तेरी दीदी तो तेरी बहुत तारीफ़ करती है"

मैं चुप रहा. अचलाजी ने अपना गाउन उतार दिया "अब तू मेहमान है, तेरी खातिर करना मेरा फ़र्ज़ है. तेरी दीदी तो वहां व्यस्त है, मुझे ही कुछ करना पड़ेगा. वैसे पता नहीं मैं तुझे अच्छी लगती हूं या नहीं, तेरी मां तो अच्छी खूबसूरत है, फ़िगर भी मस्त है, मैं उनके सामने क्या हूं"

(c) 2008, www.antarvasna.com

अचलाजी अब नंगी मेरे सामने खड़ी थीं. पूरी सिठानी थीं, एकदम गोरा पके बिही जैसा गोल मटोल बदन, पके पिलपिले पपीते सी बड़ी बड़ी लटकी चूंचियां, मुलायम तोंद, नीचे शेव की हुई गोरी पाव रोटी जैसी बुर और झाड़ के तने जैसे मोटे पैर. जब मुड़ीं तो उनकी पहाड़ सी गोरी गांड देखकर मुंह में पानी आ गया. कुछ कुछ समझ में भी आ गया. वहां दीदी के साथ जो हो रहा था, वह अचलाजी की सहमति से ही हो रहा था.

"आप तो बहुत खूबसूरत हैं अम्माजी, अब मैं क्या कहूं!" मैंने जवाब दिया. अचलाजी ने आकर मेरे कपड़े उतार दिये "तो चलो शुरू हो जाओ, छप्पन भोग तेरे सामने हैं, जो भोग लगाना हो लगा लो"

मेरा लंड देख कर उनका चेहरा खिल उठा. "अरे विनय बेटे, क्या लंड है तेरा? नीलिमा बेटी ने बताया था पर विश्वास नहीं होता था, कितना लंबा है? दस इंच?"

"नहीं मांजी, आठ इंच है पर काफ़ी मोटा है, आप को देख कर और खड़ा हो गया है इसलिये आपको दस इंच का लगता है" मैंने जवाब दिया. वैसे मेरा लंड है एकदम जानदार, तभी तो मां और दीदी मेरी दीवानी हैं. दीदी की चुदाई के समय देखा था, जीजाजी का बहुत प्यारा लंड था पर मुझसे दो इंच छोटा था. जेठजी का अच्छा खासा था, मुझसे बस जरा सा छोटा.

"अब आजा मेरे बेटे, तंग मत कर. मैं तो चूसूंगी पहले, इतना मस्त लंड है तो मलाई भी गाढ़ी होगी" कहकर मांजी ने मुझे पलंग पर लिटा दिया. फ़िर मेरा लंड चूसने लगीं. लगता है बहुत तजुर्बा था, एक बार में पूरा निगल लिया.

मुझे मजा आ गया. पर अब मुझसे नहीं रहा जा रहा था. "मांजी, जरा ऐसे घूमिये, मैं भी तो आपकी बुर का मजा लूं"

बिना लंड मुंह से निकाले अचलाजी घूमकर उलटी मेरे ऊपर लेट गयीं. उनका भारीभरकम अस्सी किलो का वजन मेरे ऊपर था पर मुझे फ़ूल जैसा लग रहा था. मैंने उनकी टांगें अलग कीं और उंगली से वो गोरी चिकनी बुर खोली. फ़िर उसमें मुंह डाल दिया. बुर से सफ़ेद चिपचिपा पानी बह रहा था. मैं उसपर ताव मारने लगा.

मां की बुर का पानी अब थोड़ा पतला हो गया है, कम भी आता है, दीदी का बड़ा गाढ़ा है और खूब निकलता है. पर अचलाजी का इस उमर में भी शहद था और जम के बह रहा था. जाने क्या खाती हैं जो इस उमर में भी ऐसी रसीली चूत है– मैं सोचने लगा. लंड चूसते हुए मांजी ने मेरी कमर को बांहों में जकड़ लिया था और मेरे चूतड़ प्यार से सहला रही थी. बीच बीच में उनकी उंगली मेरे गांड के छेद को रगड़ने लगती थी.

दो बार अचलाजी झड़ीं और मुझे ढेर सा शहद चखाया. मैंने झड़ कर उन्हें पाव कटोरी मलाई पिला दी, हिसाब बराबर हो गया.

उठकर अचलाजीने मुझे गोद में ले लिया. एक मोटी चूंची मेरे मुंह में दे दी. मुझे चूमते हुए बोलीं. "बड़ा प्यारा है तू बेटे, मलाई तो जानदार है ही, बुर भी अच्छी चूसता है. अब हफ़्ते भर यहीं रह. मजा करेंगे"

मैंने चूंची मुंह से निकाल कर कहा "मांजी, आप इतनी गरम हैं, कैसे आपका काम चलता है? मैं तो आज ही आया हूं, जब मैं नहीं था तो आप क्या करती थीं?"

"अरे सब जान जायेगा, रुक तो सही. यहां रहेगा तो बहुत सीखेगा और मजा भी लेगा. ये बता, मां को तू कब से चोदता है? पहले दीदी को चोदा या मां को?"

मैंने सब बता दिया कि दीदी ने मुझे पहले चोदना शुरू किया, बचपन में. हम एक कमरे में सोते थे इसलिये चुदाई

(c) 2008, www.antarvasna.com

शुरू करने में कोई तकलीफ़ नहीं हुई. जब दीदी को पता चला कि मेरा लंड खड़ा होना शुरू हो गया है, तब से वह मुझसे चुदवाने लगी. उसके पहले भी वह मुझसे चूत चुसवाती थी और अपनी चूंचियां मसलवाती थी. पहले पहले तो उसने जबरदस्ती की थी, बड़ी बहन का हक जता कर. बाद में किशोरावस्था शुरू होने पर मुझे भी मजा आने लगा. जब मेरा लंड खड़ा होने लगा तो उसके बाद तो मजा ही मजा था.

न जाने मां को कैसे पता चल गया कि मेरा लंड खड़ा होने लगा है. तब उसने तुरंत मुझे अपने पास सुलाना शुरू कर दिया और पहली ही रात मुझसे चुदवा लिया. बाद में पता चला कि दीदी ने उसे बताया था कि उसका बेटा जवान हो गया है. दीदी और मां का चक्कर बहुत पहले से ही था, जब मैं छोटा था. तब दोपहर को और रात को मेरे सोने के बाद दोनों लिपट जाती थीं.

जब एक दिन मुझे पता चल गया तो दोनों मिल कर मुझसे सेवा कराने लगीं. हम साथ साथ मां के कमरे में सोने लगे. सेक्स की ये भूख हमारे खून में ही है ऐसा मां ने बाद में मुझे बताया था.

मेरी कहानी सुन कर अचलाजी बोलीं. "अरे ये ही हाल हमारे यहां है, चलो अच्छा हुआ हमारे खानदान मिल गये. मैं तो मना रही थी कि किसी ऐसे हे चुदैल खानदान की चुदैल बहू मुझे मिले."

फ़िर मेरा कान पकड़कर बोलीं. "तो मादरचोद कैसा लगा मेरी बुर का रस, मजा आया? अरे साले, ऐसे आंखें फ़ाड़ कर क्या देखता है हरामी?"

उनकी गाली सुनी तो पहले मैं सुन्न हो गया. फ़िर उनको हंसते देखा तो तसल्ली हुई. मजा भी आया वे बोलीं "अरे चोदते समय खुल कर गाली गलौज करना चाहिये, मजा आता है. तेरी दीदी कैसे अपने पति और जेठ को गाली दे रही थी, सुना नहीं?" मेरे लंड को पकड़कर बोलीं. "देख, इसे तो मजा आया, फ़िर खड़ा हो गया है"

मैं भी इस मीठी नोक झोंक में शामिल हो गया "और क्या, आप जैसी चुदैल औरत का ये पका पका रूप दिखेगा तो साला लंड उठेगा ही, मेरे जैसे जवान लौंडों पर डोरे डालती हैं आप छिनाल कहीं की, अब ये बताइये कि आप को चोदूं या गांड मारूं, मां की चूत की कसम, आप की फ़ाड़ दूंगा आज रंडी मांजी"

"बहुत अच्छे विनय, बस ऐसे ही बोला कर. और गांड तो मैं नहीं मराऊंगी, फ़ड़वानी है क्या! पर आ जा मेरी चूत में आ जा, हाय तेरे जैसे हसीन छोकरे को तो मैं पूरा अंदर घुसेड़ लूं" और पलंग पर चूत खोल कर पांव फ़ैला कर लेट गयीं. मैं चढ़ गया और लंड पेल दिया. पुक्क से पूरा अंदर समा गया जैसे चूत नहीं, कुआं हो. "साली चूत है या भोसड़ा?" मैंने कहा "और इतनी चिकनी, बच्ची जैसी! आप शेव करती हो ना रोज?"

"हां बेटे, चिकनी चूत ज्यादा अच्छे से चुसती है, मैं तो चूत चुसवाने की शौकीन हूं, अब बातें न कर और चोद साले मादरचोद मुझे, देखूं कुछ दम है या ऐसे ही बोलता है? देखूं तेरी मां बहन ने कितना सिखाया है तुझे, भोसड़ीवाले!" और मुझे पकड़कर वे चूतड़ उछालने लगीं.

मैं शुरू हो गया. उनके भोसड़े में लंड आराम से सटक रहा था. दो मिनिट बाद अम्माजीने चूत सिकोड़ ली और मुझे लगा जैसे किसी कुंवारी चूत को चोद रहा हूं. मेरे चेहरे को देख वे हंसने लगीं "अरे तूने देखे नहीं है मेरी चूत के कारनामे, चल चल अपना काम कर हरामी की औलाद, तेरी दीदी की सास को खुश कर"

मैंने उन्हें मन भर के चोदा. कभी उनका मुंह चूसता तो कभी चूंची मुंह में ले लेता. मां को भी खूब देर चुदाने का शौक था इसलिये मुझे बिना झड़े घंटों चोदने की आदत थी. जब पहली बार अचलाजी झड़ीं तो सिहरकर मुझे चिपटा लिया "हाय राजा, मार डाला रे, तू तो बड़ा जुल्मी है बेटे"

मैंने और कस के धक्के लगाते हुए कहा "ठहर जाओ रंडी सासूजी, अभी क्या हुआ है, आज आपके भोसड़े को

(c) 2008, www.antarvasna.com

इतना चौड़ा कर दूंगा कि आपके दोनों बेटे फ़िर उसमें घुस जायेंगे."

आधे घंटे चोदने के बाद मैं झड़ा. तब तक चोद चोद कर अचलाजी की हवा टाइट कर दी थी. बाद बाद में तो वे रिरियाने लगी थीं "अब छोड़ दे रे बेटे, रुक जा ओ गांडू, अब नहीं रहा जाता, कितना चोदेगा? आदमी है या घोड़ा?" पर मैंने उनकी मुंह दबोच कर चोदना चालू रखा.

बाद में सुस्ताने के बाद वे बोलीं. "तू तो हीरा है रे हीरा, अब यहीं रह मेरी चूत में. घर न जा, तेरी अम्मा ने बहुत चुदा लिया, अब हमारी सेवा कर. इतनी भयानक चुदाई बहुत दिनों में नसीब हुई है"

मैं भी उनकी चूंची मुंह में लिये पड़ा था, उनके खजूर जैसे निपल को चूस रहा था. क्या औरत थी! एकदम माल था! तभी पीछे से आवाज आयी. "लो अम्मा, तुम शुरू हो गयीं? मुझे मालूम था, ऐसे चिकने छोकरे को तुम क्या छोड़ोगी" पीछे देखा तो जेठजी खड़े थे. मुझे अटपटा लगा और मैं उठने लगा तो बोले "अरे लेटा रह यार, मजा कर, हमारी अम्मा भी चीज़ है, सब को नसीब नहीं होती"

अचलाजी ने उनसे पूछा "हो गया तुम लोगों का? बहू सोई या नहीं? तुम लोग आ रहे हो यहां?"

"अरे वो रांड क्या सोयेगी इतनी जल्दी! अभी अभी लंड चुसवा कर आ रहा हूं. अब रजत चुसवा रहा है. इसके बाद एक बार और चोदेंगे तब सोयेगी साली. आज अम्मा तुम विनय को निचोड़ लो रात भर, नया नया लौंडा है, तुम मजा कर लो अकेले में, मैं चलता हूं, वहां वो साली रंडी फ़िर तड़प रही होगी" रतनजी चले गये.

मैंने अम्माजी की ओर देखा "तो अम्माजी, यहां भी ...."

मेरी बात काटकर वे बोलीं "तो क्या, तुझे लगता है कि तू ही एक मादरचोद है? अरे मेरे बेटों को तो मैं बचपन से साथ सुलाती हूं. रजत तो शादी नहीं कर रहा था, बोलता था क्या फ़ायदा, अम्मा से बढ़िया चुदैल कहां मिलेगी. पर तेरी बहन का रिश्ता आया तो मैंने मना लिया. नीलिमा को देखकर ही मैं समझ गयी थी कि हरामी छोकरी है, बहुत चुदवायेगी. अब देख सब कैसे खुश हैं"

मैंने फ़िर पूछा "तो अब आप लोग क्या करते हो साथ साथ दीदी के आने के बाद?"

वे बोलीं. "सब समझ जायेगा. अब इधर आ, मैं लंड चूस कर खड़ा कर देती हूं, आज तो रात भर चुदवाऊंगी तुझसे"

उस रात मैंने मांजी को दो बार और चोदा. सोने में रात के तीन बज गये. एक बार अचलाजी ने मुझपर चढ़ कर चोदा और एक बार मैंने पीछे से कुतिया स्टाइल में उनकी ली. जब वे मुझपर चढ़ कर उचक रही थीं तो उनकी उछलती चूचियां देखते ही बनती थीं. कुतिया स्टाइल में भी उनके मम्मे लटक कर ऐसे डोल रहे थे जैसे हवा में पपीते. पीछे से उनकी चौड़ी मुलायम गांड को देखकर मेरा मन हुआ था कि गांड मार लूं पर उन्होंने मना कर दिया.

सुबह सब देर से उठे. रविवार था इसलिये छुट्टी थी. नाश्ते के टेबल पर सब ऐसे बोल रहे थे जैसे कुछ हुआ ही न हो. मैं ही कुछ शरमा रहा था. सोच रहा था कि रात की बातें सपना तो नहीं थे. वे मेरी परेशानी देख कर हंस रहे थे. जीजाजी ने प्यार से समझाया "विनय, अब दोपहर को देखना, कल का तो कुछ भी नहीं था"

दीदी हंस रही थी. "सम्हल कर रहना विनय भैया, यहां तो सब एक से एक हैं. अम्माजी को ही देखो, जब से तेरे बारे में बताया, यहीं बोलती थीं कि अरे बुला लो उस छोरे को. अच्छा हुआ तू कल आ गया नहीं तो कोई तुझे लेने आ जाता."

(c) 2008, www.antarvasna.com

नाश्ते के बाद सब फ़िर दो घंटे को सो लिये. रात भर की थकान जो थी. दोपहर के खाने के बाद जब घर के नौकर चले गये तो सब दीदी के बेडरूम में कमा हुए. मैंने देखा कि वहां का पलंग दो डबल बेड के बराबर का था. सात आठ लोग सो जायें इतना बड़ा.

कमरे में आकर सब ने कपड़े उतारना शुरू कर दिये. सब से पहले अम्माजी और दीदी नंगी हो गयीं. दीदी की जवान मादक जवानी और अचलाजी का मोटा गोरा पके फ़ल सा बदन देख कर मेरा तन्ना गया था. पर मैं कपड़े निकालने में सकुचा रहा था. उधर जीजाजी और जेठजी भी नंगे हो गये. अच्छा खासे हैंडसम थे दोनों, रतनजी का कसरत किया हुआ शरीर था और रजत जीजाजी का शरीर अच्छा चिकना छरहरा नाजुक सा था! दोनों के लंड खड़े थे, जीजाजी का करीब छह इंच का होगा. रतनजी का करीब मेरे जितना, याने साढ़े सात आठ इंच का होगा. पहली बार पास से मैं नंगे जवान लंडों को देख रहा था, एक अजीब सा रोमांच मुझे होने लगा.

कपड़े निकालने की मेरी हिचकिचाहट देखकर अचलाजी बोलीं "अरे बहू, शरमा रहा है तेरा भाई, तू ही निकाल दे इसके कपड़े"

दीदी लचकते हुए मेरे पास आई "क्या शरमाते हो भैया लड़कियों जैसे, चलो निकालो" उसने मुझे नंगा कर दिया.

जीजाजी ने सीटी बजायी "साले, तेरा लंड तो एकदम जोरदार है, तभी अम्मा कल हमारे कमरे में नहीं आयीं, मजा ले रही थी अकेले अकेले."

अचलाजी ने मुझे पकड़कर एक कुरसी पर बिठा दिया. "रस्सी लाओ बहू. या रुको, रस्सी नहीं, दो तीन ब्रा ले आ, तेरी और मेरी" दीदी जाकर अल्मारी से ब्रा निकाल लाई. घर में तो वे दोनों शायद पहनती ही नहीं थीं.

दीदी और उसकी सास ने मिलकर ब्रा से मेरे हाथ और पांव कुरसी के पैरों से बांध दिये. बड़ा मजा आ रहा था, उन रेशमी मुलायम ब्रा का स्पर्श ही मुझे मदहोश कर रहा था. अचलाजी मुझे चूम कर बोलीं. "घबरा मत बेटे, जरा तरसाना चाहते हैं तुझे. अब बैठ और हमारा खेल देख . देख कैसे हमारा परिवार आपस में प्यार करता है. जरा मजा ले, फ़िर तुझे भी परिवार में शामिल कर लेंगे." दीदी ने मुझे देखा और मुंह बना कर चिढ़ाने लगी कि ले भुगत.

अम्माजी ने उसे पकड़कर पलंग पर खींचते हुए कहा "आजा बहू, यहां लेट जा. रजत, रतन, आओ, साले राजा को दिखाओ कि हम उसकी बहन को कितना प्यार करते हैं, ससुराल में उसका कितना खयाल रखते हैं"

दीदी को पलंग पर लिटा के अचलाजी ने उसे बांहों में भर लिया और चूमने लगीं. "मेरी बेटी, मेरी दुलारी, तेरे कारण इस घर में रौनक आ गयी है, आ मुझे अपना चुम्मा दे एक मीठा सा"

नीलिमा दीदी ने अपनी सास के गले में बाहें डाल दीं और उनका मुंह चूमने लगीं. जीजाजी और जेठजी उनके पास में बैठ कर दीदी के शरीर को सहलाने लगे. दोनों ने एक एक मम्मा मुंह में लिया और दबाते हुए चूसने लगे. रतनजी ने दो उंगलियां दीदी की चूत में डाल दीं. दीदी अब अपना मुंह खोल कर अचलाजी की जीभ चूस रही थी.

मन भर के दीदी को अपनी जीभ चुसवाकर अम्माजी उठीं. मुझे बोलीं "देख, कैसे तेरी बहन कैसी प्यासी है मेरे चुंबनों की, अब इसे अपनी बुर का प्रसाद देती हूं तेरे सामने, बड़ी भाग्यवान है तेरी बहन जो अपनी सास की बुर से प्रसाद पाती है रोज . रतन तू बहू की बुर चूस, गरम कर, देख झड़ाना नहीं, उसका पानी बाद के लिये रख, तू लेटी रह बेटी, मैं आती हूं तुझे तेरा मन पसंद रस चखाने को"

(c) 2008, www.antarvasna.com

दीदी के सिर को तकिये पर रख कर अचलाजी उसके दोनों ओर घुटने टेक कर बैठ गयीं और अपनी चूत को दीदी के मुंह में दे दिया. दीदी उसे ऐसे चूसने लगी जैसे जनम जनम की प्यासी हो. मुझे अब अचलाजी के महाकाय गोरे चूतड़ दिख रहे थे जो धीरे धीर ऊपर नीचे हो रहे थे. वे दीदी के मुंह को चोद रही थीं. "अरी ओ रांड, भूल गयी मैंने जो सिखाया था, जीभ डाल मेरी चूत में और चोद, जरा मुझे भी तो तेरी जीभ को चोदने का मौका मिले"

रजत जीजाजी नीलिमा दीदी के मम्मों को दबाते और चूसते रहे. रतनजी खिसककर दीदी की टांगों के बीच आ गये और उसकी बुर पर जीभ चलाने लगे. अचलाजी ने दीदी की जीभ को पांच मिनिट चोदा और फ़िर सिसककर उठ बैठीं. "हट रतन, अब तू बहू के मम्मे दबा, रजत, अपनी पत्नी को अपना लंड दे चूसने को" और खुद रतन की जगह लेकर दीदी की बुर को चाटने लगीं. "विनय बेटे, बड़ी मीठी है रे तेरी बहन, तुझे तो मालूम है, अरे हम तीनों को इसकी बुर का ऐसा चसका लगा है कि स्वाद लिये बिना मजा ही नहीं आता"

दीदी की यह मीठी हालत देखकर मैं पागल सा हो गया था. लंड लोहे जैसा हो गया था. उधर वे चारों भी अब फ़नफ़ना रहे थे. अम्माजी ने जेठजी का लंड मुंह में ले लिया और दीदी की बुर में अपनी उंगलियां अंदर बाहर करने लगीं. जीजाजी अब दीदी को लंड चुसाते हुए अपनी मां की बुर चूस रहे थे. चारों शरीर ऐसे आपस में उलझे थे कि पता ही नहीं चल रह था कि कौन क्या कर रहा है.

अचलाजी बोलीं "अब नहीं रहा जाता. चलो शुरू करो ठीक से. तुम दोनों नालायको, चलो आओ और ठीक से हम दोनों औरतों की सेवा शुरू करो" जीजाजी ने लंड दीदी के मुंह से निकाला और अपनी मां से चिपट कर उनकी चूंचियां चूसने लगे और रतनजी दीदी पर चढ़ कर उसके मम्मे दबाते हुए उसे चूमने लगे.

जल्द ही फ़िर लंड और बुर चुसाई शुरू हो गयी. रतनजी अपनी मां की बुर चूस रहे थे. दीदी उनका लंड चूस रही थी और जीजाजी दीदी की बुर में मुंह डाले पड़े थे. बार बार वे जगह बदल लेते, बस चुदाई नहीं कर रहे थे.

अचलाजी ने दीदी की कमर में हाथ डाल कर उसे अपनी ओर खींचा "बहू, अब अपनी बुर का पानी पिला दे तरीके से, परसों चूसी थी, तरस गयी तेरे जवान रस को, और रतन, तू आजा, मेरी चूत चूस ले, आज बहुत पानी पिलाऊंगी तुझे. और रजत बेटे, आ अपना लंड दे दे मेरे मुंह में"

आधे घंटे यही कार्यक्रम चलता रहा. मांजी ने मन भर कर दीदी की बुर चूसी. दीदी उनके सिर को जांघों में जकड़ कर धक्के मार रही थी "चूसो सासूमां, अरे तेरी यह बहू तेरे को इतना अमरित पिलायेगी कि तीरथ जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी. चल छिनाल, जीभ डाल अंदर, जीभ से चोद मुझे रांड"

रजत जीजाजी अपनी मां के सिर को अपने पेट से चिपटाकर चोद रहे थे "तेरा मुंह चोदूं मेरी छिनाल मां, क्या साली का गला है नरम नरम, अभी तेरे को मलाई खिलाता हूं अपने लौड़े की"

रजत जीजाजी जल्द ही झड़ गये. उनका लंड खाली करके अचलाजी बोलीं "इतने से क्या होगा बेटे, रतन तू ऊपर आ जा, काफ़ी बुर का शरबत पी लिया मेरा, अब मुझे मलाई खिला. बहू तू अब अपनी सासूमां का और प्रसाद ले ले, जल्द कर छिनाल, मेरे सिर को कैसे अपनी टांगों में दबा रही थी, अब तेरा मैं क्या हाल करती हूं देख रंडी की औलाद. रजत, तूने मजा ले ली ना, अब अपनी बीबी की चूत चूसकर जरा विटामिन पा ले"

रतन का लंड उन्होंने मुंह में लिया और अपनी टांगें फ़ैलकर दीदी का मुंह अपनी बुर से सटा दिया. फ़िर कस के उसे अपनी मोटी मोटी जांघों में भींचकर पैर चलाने लगीं. दीदी के मुंह से गों गों की आवाज निकलने लगी. वह अम्माजी के पैरों को अलग करके अपना सिर छुड़ाने की कोशिश करने लगी पर अचलाजी की मोटी मोटी जांघों की ताकत का उसे अंदाजा नहीं था. आखिर उसने हार मान ली और चुपचाप अचलाजी की बुर में मुंह दिये पड़ी रही. रजत को अपनी बुर चुसवाते हुए उसने अम्माजी के चूतड़ों को बांहों में भर लिया.

(c) 2008, www.antarvasna.com

आखिर अचलाजी ने सब को रुकने को कहा. जब वे चारों अलग हुए तो मैं पागल होने को था. अचलाजी को पुकार कर मैंने मिन्नत की "अम्माजी, मैं मर जाऊंगा, मुझे छोड़ो, अब चोदने दो, किसी को भी चोदने दो"

सब उठकर मेरे पास आये. वे सब भी बुरी तरह मस्त थे. रतन जेठजी और रजत जीजाजी अपने अपने लौड़े हाथ में लेकर मुठिया रहे थे. दीदी की सांस तेज चल रही थी, वह अपने ही मम्मे दबा रही थी. मांजी अपनी बुर में उंगली कर रही थीं. मेरे पास आयीं और बोलीं "चलो सब तैयार हैं मैच खेलने को, अब इस लौंडे का क्या करें? ये भी पूरा तैयार है, लंड देख, घोड़े जैसा हो गया है"

सब बारी बारी से मेरे लंड को हाथ में लेकर देखने लगे. खास कर रतन और रजत ने तो बड़ी देर तक उसे हाथ में लेकर मुठियाया. "क्या जानदार जानवर है नीलिमा! अम्मा, इसे किसके किस छेद में डालें, जहां भी जायेगा, तकलीफ़ भी देगा और मजा भी देगा" रतनजी बोले.

अचलाजी बोलीं. "इसीसे पूछते हैं, विनय, पहले एक वायदा कर तब छोड़ूंगी तुझे"

मैंने मचल कर कहा "कुछ भी करा लो मुझसे अम्माजी, आपकी गुलामी करूंगा जनम भर, बस रहम करो, ये लंड मार डालेगा अब"

अचलाजी बोलीं. "अपनी मां को यहां ले आना अगले हफ़्ते, बेचारी मेरी समधन ही अकेली है उधर. फ़िर जुड़ेगा पूरा कुनबा, तीन मर्द, तीन औरतें. मुझे भी समधन से ठीक से गले मिलना है, शादी में तो कुछ भी बातें नहीं कर पायी"

नीलिमा दीदी अपनी चूत में उंगली करते हुए बोली "हां भैया, ले आओ अम्मा को, तीन महने हो गये उसका प्रसाद पाये. इन लोगों को भी मां का प्रसाद मिल जाये तो मुझे अच्छा लगेगा" फ़िर आंख मार कर हंसने लगी.

रजत जीजाजी बोले "अरे हां भाई, हमें भी तो अपनी सास की सेवा करने दो, दोनों भाई मिलकर उनकी खूब सेवा करेंगे, है ना भैया?"

रतनजी बोले "बिलकुल, शादी में देखा था, बड़ी सुंदर हैं बहू की माताजी, मैं तो अपनी अम्मा मान लूंगा उनको"

मेरा हाल और बुरा हो गया. कल्पना की कि ये सब मिलके मां के साथ क्या करेंगे, तो ऐसा लगा कि लंड सूज कर फ़ट जायेगा.

"तो बोल मां को ले आयेगा?" अम्माजी ने पूछा. मैंने मुंडी हिलाकर हां कहा. दीदी ने सब ब्रा खोल दीं. मैं उठा और लंड हाथ में लेकर खड़ा हो गया. अचलाजी की ओर देखने लगा कि कौन मुझे गले लगायेगा?

वे दीदी को बोलीं "इतने दिनों से भाई मिला है, तू भाई के साथ मजा कर बहू. रजत को भी साथ ले ले, जीजा साले को भी आपस में मिलने दे. मैं रतन बेटे को कहती हूं कि जरा मां की सेवा करे. आ रतन"

रतनजी ने अचलाजी की कमर में हाथ डाल कर उठा लिया और चूमते हुए पलंग पर ले गये. मैं देखता ही रह गया, इतनी आसानी से उनका अस्सी किलो का बदन रतनजी ने उठाया था कि जैसे नई नवेली दुल्हन हो. अचलाजी मेरे इस अचरज पर हंस कर बोलीं "अरे बचपन से ये दोनों उठाते हैं मुझे ऐसे ही. पहले मैं दुबली थी. अब मोटी हो गयी हूं पर रतन अब भी अपनी अम्मा को उठा लेता है. हां बेचारा रजत जरा नाजुक है, अब उठाने में थक जाता है"

(c) 2008, www.antarvasna.com

रतन ने अपनी मां को पलंग पर पटका और चढ़ बैठा. सीधे लंड चूत में डाला और शुरू हो गया. "अरे मादरचोद, सीधे चोदने लग गया, मां की बुर नहीं चूसेगा आज?" अम्माजी ने उलाहना दिया.

"अम्मा, बाद में रजत या विनय से चुसवा लेना. या फ़िर तेरी बहू से, वो तो हमेशा तैयार रहती है, आज तो मैं तुझे घंटे भर बस चोदूंगा. कल रात विनय तुझे चोद रहा था, वो देखकर मुझे खयाल आया कि मैंने तुझे तीन चार दिन से नहीं चोदा" कहकर रतनजी ने मुंह में मां के होंठ लिये और हचक हचक कर चुदाई शुरू कर दी.

दीदी मेरा हाथ पकड़कर पलंग पर ले गयी "तू चूत चूस ले रे मेरे राजा पहले, बहुत दिन से बुर का पानी नहीं पिलाया तुझे. पहले चूस ले, अभी साफ़ माल है मेरी चूत में, बाद में चुद कर स्वाद बदल जागेगा." वो पलंग के छोर पर पैर फ़ैला कर बैठ गयी और मैंने सामने नीचे बैठ कर उसकी बुर में मुंह डाल दिया. इतने दिनों बाद दीदी की बुर का रस मिला, मैं निहाल हो गया.

जीजाजी मेरे साथ नीचे बैठ गये और एक हाथ मेरी पीठ पर फ़िराने लगे "आराम से चाट साले, मजा ले अपनी बहन की चूत के पानी का. लंड तेरा बहुत मस्त है, इतना मस्त लंड नहीं देखा" उनका दूसरा हाथ मेरे लंड को पकड़कर मुठिया रहा था. इतने प्यार से वे कर रहे थे कि मैं झड़ने को आ गया. "अरे हरामी, साले को झड़ा मत अभी, मुझे चुदवाना है" दीदी ने उन्हें मीठी गाली दी.

दीदी ने झड़कर अपना पानी मेरे मुंह में फ़ेका और उसे फ़टाफ़ट पी के मैं उठ कर खड़ा हो गया "चल दीदी, अब गांड मरा ले. आज मैं तुझे चोदूंगा नहीं, गांड मारूंगा. कल मांजी को बहुत चोदा है, अब गांड की भूख है मुझे"

"गांडें तुझे बहुत मिलेंगी साले, हां चूतें दो ही हैं. आज अपनी बहन को चोद ले, तू इधर आ रंडी" कहकर जीजाजी पलंग के सिरहाने से टिक कर बैठ गये. नीलिमा के बाल पकड़कर उसका सिर अपनी गोद में खींचा और लंड उसके मुंह मे ठूंस दिया. "विनय, पीछे से चढ़ जा साली पर"

मैंने दीदी की कमर में हाथ डाल कर उठाया और उसे घुटनों और हाथों पर कर दिया. उसके पीछे घुटने टेक कर एक बार प्यार से उसकी चूत को चूमा, बहुत दिन मेरी प्यारी को पास से देखा था. फ़िर लंड अंदर उतार दिया. दीदी की मखमली म्यान ने मेरे लंड को दबोच लिया, जैसे कह रही हो, आजा प्यारे, बहुत दिन में मिले हैं. दीदी के कूल्हे पकड़कर मैं चोदने लगा.

जीजाजी बोले "अरे चढ़ जा यार उसपर, जवान है, तेरा वजन सह लेगी. मैं और रतन अक्सर चढ़ते हैं, बड़ी मस्त घोड़ी है. मां की बात अलग है, उसकी उमर अब हो गयी है इसलिये वजन नहीं झेल पाती, नहीं तो जवानी में तो मुझे और रतन को खूब सवारी कराती थी.

मैंने झुक कर अपना वजन दीदी पर डाल दिया और पैर उठाकर उसकी कमर के इर्द गिर्द जकड़ लिये. दीदी आराम से मेरे वजन को संभालती हुए चुदवाती रही, चूं तक नहीं की, वैसे उसका मुंह जीजाजी के लंड से भरा था. मैं उसके मम्मे पकड़कर दबाते हुए कस के चोदने लगा. क्या आनंद आ रहा था. जीजाजी की मन ही मन दाद दी. क्या आसन सिखाया था मेरी बहन को.

अब जीजाजी का सिर मेरे सामने थी, एक फ़ुट दूर. उनकी आंखों में अजब खुमारी थी. बोले "उधर देख, मां बेटे की क्या जोरदार चल रही है." देखा तो पलंग के दूसरे छोर पर रतनजी अपनी मां को कस कर चोद रहे थे. अचलाजी ने अपनी मोटी टांगें उनके चूतड़ों के इर्द गिर्द समेट ली थीं और चूतड़ उछाल उछाल कर चुदवा रही थीं.

तभी जीजाजी ने मेरा गाल चूम लिया. फ़िर मेरे सिर को हथेलियों में ले कर मेरे होंठ चूमने लगे. मैं सिहर उठा. पहला मौका था कि किसी मर्द ने चूमा था. पर अब मैं इतना मस्ती में था कि मुझे जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई.

(c) 2008, www.antarvasna.com

आंख बंद करके मैं उनके चुम्मे का जवाब देने लगा. जीजाजी के मुंह और गालों से बड़ी प्यारी खुशबू आ रही थी, लगता है इत्र या आफ़्टर शेव की थी. अब मैं झड़ने को था. इतना मजा आया कि मैंने जीजाजी के होंठ दांतों में पकड़ लिये. फ़िर कसमसा कर झड़ गया.

मेरे लस्त हुए बदन को सहारा देते हुए जीजाजी ने अपनी जीभ से मेरा मुंह खोला और मेरी जीभ मुंह में लेकर चूसने लगे. साथ ही अपने चूतड़ उछालने लगे. वे भी झड़ने को आ गये थे. एक अखिरी धक्के के साथ वे नीलिमा दीदी के मुंह में झड़ गये.

कुछ देर बाद मैंने जीजाजी के मुंहसे अपना मुंह हटाया और उठ कर बाजू में बैठ गया. दीदी को नीचे लिटा कर जीजाजी ने उसकी बुर में मुंह डाल दिया. जीभ निकाल कर उसे चाटने लगे. मैं देखने लगा. मेरा सफ़ेद वीर्य दीदी की चूत में से बह रहा था. जीजाजी ने उसे पहले चाटा और फ़िर बुर चूसने लगे.

उधर दीदी ने मुझे इशारा किया कि पास आऊं और उसे चुम्मा दूं. उसका मुंह बंद था. मैंने जैसे ही उसके मुंह पर अपने होंठ रखे, उसने मुंह खोल कर जीजाजी का थोड़ा वीर्य मेरे मुंह में छोड़ दिया. मैं थूक न दूं इसलिये मेरे मुंह को वो अपने मुंह से जकड़े रही. आंखों से मुझे इशारा किया कि निगल जाऊं. बहुत बदमाश थी, हंस रही थी कि कैसा उल्लू बनाया. मैंने मन कड़ा किया और निगल गया. चिपचिपा खारा स्वाद था. मुझे बुरा नहीं लगा. आखिर ऐसी धुआंधार चुदाई में कुछ भी जायज है ऐसा मैंने सोचा.

उधर रतनजी भी अब झड़ गये थे. मांजी टांगें पसार कर पड़ी थीं. बोलीं "इधर आओ विनय बेटे" मैं उठ कर पास गया. रतनजी ने अचानक झुक कर मेरा झड़ा लंड मुंह में ले लिया और चूसने लगे. साफ़ करने के बाद बोले "विनय, तेरी दीदी का माल लगा था इसपर, कौन छोड़ेगा इस खजाने को? वैसे थोड़ी मलाई तेरी भी थी, बहू की बुर के शहद में मिलकर बहुत मस्त लग रही थी" फ़िर उठकर सरककर दीदी के पास पहुंच गये. "लो रानी, मलाई तो गयी मां की बुर में, तू लंड चूस कर संतोष कर ले"

उनका झड़ा लंड मुंह में लेकर दीदी चूसने लगी. जीजाजी अब भी उसकी बुर जीभ से टटोल रहे थे. रतनजी बोले "अरे छोटे, अपने साले की मलाई इतनी अच्छा लगी कि अब चूत में गहरायी से घुस कर कतरे ढूंढ रहा है"

मैं मांजी के पास पहुंचा तो उन्होंने मेरी गर्दन पकड़कर अपनी टांगों के बीच मेरा सिर दबा दया. "चल, चाट ले, बहुत पानी बहाया है आज मैंने" उनकी बुर से गाढ़ी सफ़ेद मलाई टपक रही थी. रतनजी का वीर्य था! मैं हिचकिचाया तो मेरा कान पकड़कर बोलीं. "अरे मेरा गुलाम बनकर रहने वाला था ना तू भोसड़ीवाले, चल, अपनी मालकिन का हुकुम मान. साफ़ कर चुपचाप, और कोई बेकार चीज नहीं चखा रही हूं, मस्त मर्दाना मलाई चखा रही हूं तुझे"

मैंने जीभ निकाली और चाटने लगा. बुर का और वीर्य का मिला जुला स्वाद था. खराब नहीं था. पास से उस बुरी तरह चुदी हुई लाल लाल बुर का नजारा भी ऐसा था कि मैं अपने आप को रोक नहीं पाया और चाटने लगा.

पूरी बुर चटवाने पर अचलाजी ने उंगलियों से चूत चौड़ी की और बोली "अभी और है, जीभ डाल" लाल लाल भोसड़े के अंदर सफ़ेद सफ़ेद कतरे फ़ंसे थे. मैं जीभ डाल डाल कर चूसने लगा. मांजी अब भी गरम थीं . मेरा सिर पकड़कर मेरे मुंह को अपनी चूत पर घिसने लगीं. एक बार फ़िर झड़ कर ही मुझे छोड़ा. मुझे अपनी गोद में खींच लिया और चूमते हुए पूछा "मजा आया?"

मैंने हामी भरी. फ़िर मन न माना तो धीमे स्वर में पूछा "अम्माजी, ये जीजाजी ने मेरा चुम्मा लिया. फ़िर दीदी ने उनका वीर्य पूरे निगले बिना ही मुझे चूम लिया. रतनजी ने मेरा लंड चूस लिया, दीदी के बुर के पानी के लिये. आप ने भी अपनी बुर चुसवाई जब कि उसमें रतनजी का वीर्य था. मैंने नहीं सोचा था कि ऐसा कुछ भी होता है"

(c) 2008, www.antarvasna.com

मांजी हंसने लगीं. "अरे तू भोला है. रतन असल में तेरे लंड का स्वाद लेना चाहता था, बहू की चूत के पानी का तो बहाना था. तेरी बहन ने भी जान बूझ कर तुझे अपने पति की मलाई चखाई, तुझे बता रही थी कि कितनी जायकेदार है इसीलिये तो रोज पीती है. मैं भी तुझे अपने बड़े बेटे की मलाई चखाना चाहती थी, बुर चुसवाने का तो बहाना था. और रजत ने तुझे चूमा, उसमें क्या बात है, तू अच्छा खूबसूरत लौंडा है, उसका मन नहीं माना"

मैं चुप रहा. अचलाजी आगे बोलीं. "तुझे भी अच्छा लगा ना? झूट मत बोल, देख तेरा लंड कैसे सिर उठाने लगा है. अरे बेटे, जब पांच पांच नंगे बदन मिलेंगे तो किसे फ़रक पड़ता है कि कौन मर्द है कौन औरत. और बुर की चासनी और लंड की मलाई का चस्का एक बार लग गया तो और कुछ अच्छा नहीं लगता."

सब आराम कर चुके तो अचलाजी ने कहा. "चलो, एक पारी और हो जाये तो फ़िर सब लोग सो लेना. आज रात भर जागना है. विनय कल जाने वाला है"

सब ने कहा रुक जाओ. मैं बोला कि जरूर रुक जाता पर घर में काम है और मां को भी लाना है. मांजी बोलीं. "हां बेटे, जा और तैयारी से आना मां के साथ, दो तीन महने के लिये. तेरी तो गर्मी की छुट्टी है. हम सब एक परिवार जैसे रहेंगे."

सब सरक कर पास पास आ गये और एक दूसरे को चूमने और बदन पर हाथ फ़ेरने लगे. तीनों लंड फ़िर तैयार थे. अचलाजी बोलीं "अब ऐसा करो, सब मिलकर बहू पर चढ़ जाओ. रांड इतनी चुदक्कड़ है, इसे आज पूरा मजा दो. तीन तीन लंडों से चोदो. इसके सब छेद भर दो."

जीजाजी बोले "अम्मा, तू क्या करेगी, अकेली रह जायेगी"

अम्माजी बोलीं "मेरे चिंता न करो, मैं सब के मुंह से काम चला लूंगी. फ़िर रात भी तो पड़ी है. रात को यही सुख मुझे देना"

"चलो भाई अपने अपने छेद ढूंढ लो इस छिनाल के बदन से. बोल विनय, तुझे कौन सा चाहिये? वैसे मुझे मालूम है तू क्या पसंद करेगा" रजत जीजाजी बोले.

"हां दीदी, अब तो मैं तेरी गांड मारूंगा, चल लेट जा नीचे" मैंने दीदी को पलंग पर पटककर कहा. वह नखरा करने लगी. मन में तो बड़ी खुश हुई होगी "अरे नहीं, तीन तीन लंड! मुझे मार डालोगे क्या" और उठने की कोशिश करने लगी.

जीजाजी बोले "ये रांड ऐसे नहीं मानेगी, जबरदस्ती करनी पड़ेगी, चल मुंह खोल हरामजादी" कहकर उन्होंने दीदी के गाल पिचकाकर उसका मुंह खोला और लंड डाल कर उसका मुंह बंद कर दिया. दीदी अं अं करने लगे. रतनजी तुरंत दीदी पर चढ़ गये और उसकी चूत में लंड पेल दिया. फ़िर दीदी को बांहों में पकड़कर पलट कर नीचे हो गये.

दीदी के चूतड़ अब ऊपर थे. मैंने झपटकर उसके चूतड़ों को चूमना शुरू कर दिया "वाह दीदी, तेरी गांड तो यहां ससुराल में और मोटी हो गयी है. जल्द ही अम्माजी जैसी हो जायेगी, तरबूजों जैसी" और फ़िर उसकी गांड का छेद चूसना शुरू कर दिया.

जीजाजी बोले "वा मेरे शेर, गांडों का बहुत शौकीन है तू. तुझे यहां बहुत गांडें मिलेंगी. अम्मा तुम भी विनय का लंड गीला कर दो, तेल लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी"

(c) 2008, www.antarvasna.com

अचलाजी ने मेरे लंड को मुंह में ले कर गीला कर दिया. मैंने अब दीदी की गांड में लंड पेलना शुरू कर दिया. सुपाड़ा अंदर जाते ही दीदी छटपटाकर गों गों करने लगी. "अरे काफ़ी दिनों के बाद मरा रही है ना इतने बड़े लंड से, साली का छेद फ़िर टाइट हो गया है लगता है. अब आयेगा मजा जब गांड फ़टेगी छिनाल की" रतनजी बोले.

"अरे, तेरा लंड भी तो है चूत में, गांड और टाइट हो जाती है ऐसे में" अचलाजी बोलीं. वे दीदी के मम्मे मसल रही थीं. मैंने लंड पेलना जारी रखा. आज धीरे धीरे जा रहा था नहीं तो हमेशा दीदी एक बार में ले लेती थी. पूरा पेल के मैं दीदी पर लेट गया और उसकी गांड मारने लगा. रतन जेठजी के लंड का आकार मुझे महसूस हो रहा था.

हम तीनों दीदी को चोदने लगे. "आराम से चोदो हरामन को, घंटे भर कूटो, पूरा मजा लो और इसकी खूब दुर्गति करो" अचलाजी ने कहा. उन्होंने एक चूंची मेरे मुंह में दे दी थी और रजतजी को चूम रही थीं.

हमने खूब देर दीदी की धुनाई की. पलट पलट कर चोदा. कभी मैं ऊपर होता कभी रतनजी. जो ऊपर होता वो कस के हचक हचक के चोदता, नीचे वाला चूतड़ उछाल कर नीचे से पेलता. जीजाजी तो मजे में दीदी के सिर को फ़ुटबाल जैसा पकड़कर पेट से सटाये उसका गला चोद रहे थे. बिलकुल रेप जैसा मजा आ रहा था. दीदी पहले खूब छटपटाई, छूटने की कोशिश करती रही, फ़िर लस्त हो गयी और रबड़ की गुड़िया जैसी निढाल पड़ी रही.

मांजी जैसे उनसे बनता था मजा ले रही थी. बारे बारी से हम तीनों को चूमतीं या अपनी चूत हमारे मुंह से लगा देतीं. बीच बीच में दीदी की चूचियां गूंध देतीं.

आखिर हम तीनों झड़े और पूरा वीर्य दीदी के शरीर में उगल दिया. "मजा आ गया साले, आज इसकी सही चुदाई हुई है" जीजाजी बोले.

लंड निकाले तो दीदी बेहोश थी. "अरे अभी जाग जायेगी छिनाल, चिंता मत कर" अचलाजी ने कहा और बारी बारी से दोनों बेटों का लंड चूसने लगीं. जीजाजी दीदी की चूत में मुंह डाल कर चालू हो गये, अपने बड़े भाई की मलाई और बुर के रस का स्वाद लेने लगे और रतनजी ने दीदी की गांड को मुंह लगा दिया. पता नहीं उन्हें दीदी की गांड का स्वाद लेना था या मेरे वीर्य का, या फ़िर दोनों.

दीदी दस मिनिट बाद होश में आई और रोने लगी. मुझे लगा कि शायद ज्यादती हो गयी पर अचलाजी को मालूम था. उन्होंने आंखो के इशारे से मुझे कहा कि कुछ नहीं होगा. बात सच थी. जब दीदी शांत हुई तो अपनी सास से लिपट गयी "मांजी, आज मैं निहाल हो गयी, इतना सुख कभी नहीं मिला. आप सब मुझे इतना प्यार करते हो, मुझे तो लगता था कि मर न जाऊं, इतना मजा आ रहा था"

मांजी ने पुचकार कर उस चुप कराया. सब थक गये थे इसलिये वहीं पलंग पर जैसे बने, लुढ़क कर सो गये.

रात को बाहर से खाना मंगाया गया. दीदी ने सबके लिय बादाम का दूध बनाया. खाना खाकर थोड़ी देर सब ने टी वी देखा. फ़िर दीदी के कमरे में इकठ्ठे हुए.

इस बार अचलाजी की सेवा की गयी. मैं आतुर था देखने को कि उनकी गांड किसको मिलती है. मुझे उन्होंने मना कर दिया. "बेटे, तेरा बहुत बड़ा है, मैं झेल नहीं पाऊंगी. तू तो मेरे चूत में आजा"

मेरी निराशा देखकर बोलीं. "दिल छोटा न कर, जब मां के साथ आयेगा, तब देखूंगी. एक दो चीजें हैं मेरे दिमाग में"

मैंने उनकी चूत में लंड डाला, रतनजी ने उनके मुंह को निशाना बनाया और जीजाजीने अपनी प्यारी मां के चूतड़ों

(c) 2008, www.antarvasna.com

के बीच लंड उतारा, धीरे धीरे प्यार से, वे सी सी कर रही थीं जैसे तकलीफ़ हो रही हो. फ़िर हम शुरू हो गये.

दीदी पास बैठकर अपनी बुर में उंगली कर रही थी. थोड़ी देर बात बोली "क्या धीरे धीरे पुकुर पुकुर कर रहे हो. इस चुदैल औरत को क्या मजा आयेगा. मुझे चोदा था वैसे चोदो, हचक हचक के. तब साली झड़ेगी, ये मेरी सास तो मुझसे ज्यादा चुदक्कड़ है, जनम भर दो लंडों से चुदवाती आई है."

हम धीरे धीरे चोद रहे थे पर दीदी की बात सुनकर तैश में आ गये. पूरे जोर से अचलाजी के तीन छेदों में लंड पेलने लगे. उनकी लटकी छातियां मेरे सीने से भिड़ी थीं, नरम नरम गद्दे जैसी लग रही थीं. उनका चेहरा मेरे पास था और रतनजी का लंड उनके मुंह में अन्दर बाहर होता हुआ मुझे साफ़ दिख रहा था. मेरा मन न माना और मैंने वैसे ही अचलाजी के होंठों का किनारा चूम लिया. जीजाजी का लंड मेरे होंठों से घिसता हुआ अचलाजी के मुंह में पिल रहा था.

कुछ देर बाद मैंने देखा कि अचलाजी ने अपना एक हाथ उनके चूतड़ों के इर्द गिर्द लपेट लिया था और उनकी उंगली जीजाजी की गांड में घुसी हुई थी. वे उसे अंदर बाहर कर रही थीं. रतनजी जिस जोश से अपनी मां का मुंह चोद रहे थे, उससे साफ़ था कि उन्हें बड़ा मजा आ रहा था. मांजी की आंखें भी खुमारी से लाल हो गयी थीं जैसे ढेरों शराब पी रखी हो. साली सिठानी को मजा आ रहा है, मैंने मन ही मन सोचा और कस के चोदने लगा.

जब चुदाई खतम हुई तो अचलाजी बोलीं. "बहुत दिन के बाद ऐसे चुदाया है मैंने. पहले जवान थी तो रोज बेटों से आगे पीछे से एक साथ चुदाती थी. अब सहन नहीं होता, खास कर गांड दुखती है. तुम तीनों मिलकर अब मेरी बहू को हफ़्ते में एक दो बार ऐसे ही चांप दिया करो. रोज मत करना नहीं तो टें बोल जायेगी."

कुछ आराम करने के बाद सब सोचने लगे कि अब क्या किया जाये. कोई बोला जोड़ियां बना लेते हैं, बचा हुआ मेंबर बारी बारी से हर जोड़ी में शामिल हो जायेगा. कोई बोला सब मिलकर करते हैं.

मांजी मुझे प्यार से चूम रही थीं. मेरे लंड को वे दोनों हथेलियों में लेकर बेलन सा घुमा रही थीं. बोलीं "झगड़ा मत करो, अब मैं बताती हूं क्या करना है. विनय को कल जाना है, अब सोना चाहिये. उससे पहले विनय के साथ और मस्ती कर लो. मैं और बहू बहुत चुदवा चुके, कोई छेद नहीं बचा, लंडों ने घिस घिस के हमारे छेद छिल दिये हैं, अब ऐसा करते हैं कि मैं और बहू जरा आपस में इश्क कर लते हैं, दो औरतें ही जानती हैं कि एक दूसरे को कैसे मजा दिया जाता है. और तुम तीनों बच्चे आपस में खेल लो, जान पहचान बढ़ा लो"

मेरा दिल धड़कने लगा. दीदी वहां एक हाथ में जीजाजी का और एक हाथ में रतनजी का लंड लेकर ऊपर नीचे कर रही थी. बोली "हां भैया, यही अच्छा रहेगा. आज जान पहचान हो जायेगी तो आगे आसानी रहेगी." जीजाजी और रतनजी भी मेरी ओर देख रहे थे, और मंद मंद मुस्करा रहे थे.

मेरा लंड खड़ा होने लगा था. "अम्मा, तू जा और नीलिमा का मन बहला, मैं देखता हूं विनय को" कहकर जीजाजी ने मेरा लंड अपने हाथ में ले लिया. रतनजी भी खिसककर मेरे पास आ गये और अपना लंड मेरे हाथ में दे दिया. "देख ले विनय, तेरे जितना बड़ा तो नहीं है पर तेरी दीदी को बहुत पसंद है." उनका लंड भी आधा खड़ा था. एकदम गोरा और सटीक़

जीजाजी मेरे पीछे बैठ गये और मेरे लंड को सहलाते हुए पीछे से मेरी पीठ पर हाथ फ़ेरने लगे. रतनजी मेरे सामने बैठे थे. उन्होंने मेरे शरीर को सामने से सहलाना शुरू कर दिया. "विनय, तेरी जवानी जोरदार है, बदन भी अच्छा चिकना है, कोई ताज्जुब नहीं कि तेरी मां और दीदी तुझपर मरती हैं"

मैं पहले झिझक रहा था. थोड़ा अजीब सा लग रहा था. पर जीजाजी मेरे लंड को बहुत प्यार से सहला रहे थे. उनकी उंगलियां मेरे लंड के आसपास लिपटी थीं और अंगूठे से वे सुपाड़े के नीचे के हिस्से को घिस रहे थे. इस

(c) 2008, www.antarvasna.com

कला में वे माहिर लगते थे. जल्द ही मेरा तन्नाने लगा.

झेंप मिटाने को मैंने दीदी की ओर देखा. दीदी को अचलाजी ने अपनी गोद में बिठा लिया था और उसके मुंह को खोल कर उसे मिठाई जैसे चूस रही थीं. हमारी ओर उनका ध्यान नहीं था. दोनों एक दूसरे की बुर अपनी उंगलियों से खोद रही थीं. कई बार मां भी दीदी को ऐसे ही गोद में लेकर प्यार किया करती थी. मेरा और जम कर खड़ा हो गया.

अब जीजाजी और जेठजी की हरकतों में मुझे मजा आने लगा. मैंने पीछे घूमकर जीजाजी को कहा "आप मस्त मुठियाते हो लंड को जीजाजी, कला है आपके हाथ में" वे मेरे पीछे से उठकर मेरे बाजू में बैठ गये. "और कला देखनी है मेरी साले राजा?" और झुक कर मेरे लंड को चूसने लगे. एक ही बार में उन्होंने पूरा लंड गले में उतार लिया.

मैं अचंभे में था. रतनजी मुस्करा कर बोले "अरे ये माहिर है इसमें, हम दोनों को ही ये अच्छे से आता है, आखिर मां के साथ बचपन से प्यार करते हुए आपस में भी मजा करना हमने बहुत पहले सीख लिया है, कोई चीज ऐसी नहीं है जो हमने न आजमाई हो"

जीजाजी पलंग पर लेट गये और मुझे भी नीचे खींच लिया. "आराम से लेट जा विनय, जरा मजा करेंगे" और फ़िर मेरा लौड़ा चूसने लगे. उनका आधा खड़ा आधा नरम लंड मेरे ठीक सामने था. अच्छा खासा गोरा चिकना लंड था, भले ही बहुत बड़ा न हो. उनके चिकने पेट पर वह ऐसा फ़ब रहा था जैसे किसी किशोर का लंड हो जिसकी झाटें भी न ऊगी हों.

मैंने एक हाथ में जीजाजी का लंड लिया और एक में जेठजी का, और खेलने लगा. जेठजी का अब मस्त खड़ा हो गया था. वे मेरे पीछे लेट गये और उसे मेरे नितंबों पर रगड़ने लगे. मैं दुविधा में था कि ये न जाने क्या करें पर वे बस उसे मेरी जांघों और चूतड़ पर रगड़ते रहे और पीछे से मेरी पीठ चूमने लगे.

काफ़ी मजा आ रहा था. मैंने जीजाजी का लंड अपने गालों और होंठों पर रगड़ा और और सुपाड़ा मुंह में लेकर चूसने लगा. मैंने कभी सोचा नहीं था कि मैं कभी ऐसा करूंगा पर दो दिन की इस कामुक चुदाई के बास समां ही कुछ ऐसा बन गया था कि हर काम में मजा आ रहा था.

जीजाजी अब मेरे लंड को चूस रहे थे और एक उंगली से मेरे गुदा को टटोल रहे थे. उनकी उंगली धीरे धीरे अंदर हो गयी. मैंने भी उनके लंड को मुंह में लिया. आराम से पूरा मेरे मुंह में समा गया. उसे चूसते हुए मैंने भी उनके चिकने चूतड़ रगड़े और एक उंगली उनकी गांड में डाल दी.

थोड़ी देर लंड चूसने के बाद उन्होंने मेरा लंड मुंहसे निकाला और रतनजी को बोले "भैया, अब तुम चख लो, विनय का बड़ा जानदार लंड है, मुझे अपना लंड दे दो, हफ़्ता हो गया उसे मुंह में लिये."

"हफ़्ता तो बहुत चीजों को हो गया छोटे, तूने उसे अपनी गांड में भी नहीं लिया है बहुत दिन से, चल चूस ले" कहकर वे हमारे पास लेट गये. "विनय, जरा खिसक यार, अब जरा एक बड़ा त्रिकोण बनाना पड़ेगा."

मैं खिसका. रतनजी ने मेरा लंड मुंह में लिया और खुद अपना लंड अपने छोटे भाई के मुंह में दे दिया. हम एक दूसरे के लंड चूसने लगे. रतनजी तो लगता है मेरे चूतड़ों पर फ़िदा हो गये थे. उन्हें दबा और मसल रहे थे और मेरे लंड को गले तक निगलकर जीभ से रगड़ रगड़कर चूस रहे थे. मेरे मुंह में घुसा जीजाजी का लंड अब तक पूरा तन गया था और मेरे हलक तक उतर गया था, मुंह पूरा भर गया था. लंड अब मुंह में जिंदा जानवर जैसा थिरक रहा था. अब मुझे समझ में आया कि क्यों औरतें लंड चूसने के लिये तैयार रहती हैं.

(c) 2008, www.antarvasna.com

जेठजी मेरी गांड में अब जोर से उंगली कर रहे थे, अंदर बाहर करके घुमा भी रहे थे. मेरी वासना ऐसे भड़की कि मैंने जीजाजी का लंड जोर जोर से चूसना शुरू कर दिया. उन्होंने मेरे सिर को अपने पेट पर दबा लिया और धक्के मारने लगे. मुंह चुदवाने में मुझे बड़ा आनंद आ रहा था. मैंने ऐसा चूसा कि दो मिनिट में वे झड़ गये. उनका वीर्य मेरे मुंह में भर गया. पहले भी मैंने उसे चखा था पर अब सीधा मुंह में लेकर मुझे वह और स्वादिष्ट लगा. मेरा लंड भी अब कस के तनतना रहा था इसलिये जीजाजी की मलाई पीने में और मजा आ रहा था.

मैंने रतनजी का सिर पकड़कर उनके मुंह में लंड पेलना शुरू कर दिया. एक बार लगा कि पता नहीं वे नाराज न हो जायें, पर मजा इतना आ रहा था कि मैंने उस बात पर खयाल नहीं किया. रतनजी भी मजे से मेरे लंड को मुंह में पिलवाते रहे. मेरे झड़ने पर लंड को और कस के मुंह में दबा कर उन्होंने पूरा वीर्य चूस डाला. अब तक वे भी शायद अपने भाई के मुंह में झड़ गये थे.

पड़े पड़े हम हांफ़ते हुए आराम करने लगे. अब झड़ने के बाद मुझे थोड़ा अटपटा लग रहा था. अभी अभी मैंने दो जवान मर्दों के साथ समलिंगी संभोग किया था. पर आनन्द बहुत आया था. जीजाजी बोले "क्यों साले, मजा आया?"

मैंने बस मुंडी हिलायी. फ़िर जेठजी से माफ़ी मांगी "रतनजी, सॉरी, मैं जरा बहक गया था इसलिये आपके मुंह में लंड पेलने लगा."

वे मेरे पास आये और मुझे बांहों में भरके सीधे चूम लिया. अच्छा गहरा लंबा चुम्मा लिया, मेरी आंखों में देखते हुए. उनके मुंह में अब भी मेरे वीर्य की खुशबू थी. "तू मेरे साथ कुछ भी कर सकता है विनय, तेरे साथ हर चीज करने में मुझे मजा आयेगा. वैसे आज हमने किया ही क्या है? अगली बार आना, मां के साथ तब दिखायेंगे कि लंडों के साथ कैसे मजा करते हैं" उनकी उंगली फ़िर मेरे गुदा में घुस गयी थी. मैं उनका मतलब समझ गया, अजीब सी गुदगुदी दिल में होने लगी.

उधर दीदी और अचलाजी भी अब उठ बैठी थीं. हम मर्दों के खेल जब चल रहे थे तब उन्होंने मन भर के एक दूसरे की बुर चूस ली थी.

अचलाजी बोलीं "विनय ठीक से जान पहचान हुई या नहीं तेरे जीजाजी और जेठजी के साथ? मेरा ध्यान नहीं था, तेरी ये दीदी इतनी मीठी है कि इसीको चखने में लगी थी"

दीदी मुस्करा कर बोली "बहुत जान पहचान हो गयी है अम्माजी, खाना पीना भी हो गया है, देखो सब कैसे बिलौटे जैसे मुस्करा रहे हैं"

"चलो अब सो जाओ, रात बहुत हो गयी है, विनय बेटा, आराम करो, तुझे सुबह सुबह जाना है. अब जल्द से जल्द अपनी मां को लेकर यहां आ जाओ. हम तब तक उनकी खातिर करने की तैयारी करते हैं"

मैं सो गया. मन में एक पूरी तृप्ति और आनंद था. यही सोच रहा था कि जब मां के साथ वापस आऊंगा तो क्या धमाल होगी.

मैं घर पहुंचा तब रात हो चुकी थी, ट्रेन लेट हो गयी थी. बेल दो बार बजानी पड़ी तब मां आयी. पहले पीपहोल में से झांक कर देखा कि कौन है और फ़िर दरवाजा खोला. वह बस जल्दी जल्दी में एक साड़ी लपेट कर आयी थी. उसकी सांस भी चल रही थी. मुझे देख कर खुश हो गयी "आ गया बेटे, मैं कब से इंतजार कर रही थी! नीलिमा को साथ नहीं लाया?"

(c) 2008, www.antarvasna.com

मैं सीधा बेडरूम में चला गया. वहां टेबल पर मोटा छिला केला पड़ा था. "मां, तू भी अच्छी चुदैल है! दो दिन बेटे से बिना चुदवाये नहीं रह सकती. केले से मुठ्ठ मार रही थी ना?"

"अरे बेटे, तू क्या जाने मां के दिल का हाल, अपने बेटे से दूर रहने में मेरा क्या हाल होता है तू नहीं समझेगा" मां ने साड़ी खोलते हुए कहा. उसके नंगे बदन को देख कर मेरा भी खड़ा हो गया. "तू अब जरा धीरज रख, मैं नहा कर आता हूं." उसे चूम कर मैं नहाने चला गया.

वापस आया तो मां नंगी पलंग पर पड़ी थी और केले को चूत में धीरे धीरे अंदर बाहर कर रही थी. सिसक कर बोली "अब आ जा बेटे, रहा नहीं जाता. पूरे चार दिन हो गये चुदवाये हुए"

मैंने केला खींच कर निकाला और टेबल पर रख दिया. फ़िर मां पर चढ़ कर चोदने लगा. मां ने सुख की सांस ली "हाय बेटे, कितना अच्छा लग रहा है. अब बता, नीलिमा कैसी है"

मां के चुम्मे लेते हुए मैंने कहा "एकदम मस्त है, यहां तो उसे प्यार करने वाली एक मां और एक भाई थे, वहां उसे पति का प्यार तो मिलता ही है, सास और जेठ का भी प्यार मिलता है. दो दो लौड़े और एक चूत. वह तो ऐसी खुश है कि क्या बताऊं"

"अरे तुझे कैसे पता लगा? उसने बताया? उनके घर में भी ऐसा होता है?" मां ने खुश होकर पूछा.

"अरे मां, वो तो हम से भी सवाई हैं इस मामले में. खुद देख कर आ रहा हूं. और सिर्फ़ देखा ही नहीं, किया भी, नीलिमा दीदी को चोदा जीजाजी के सामने, फ़िर सब के सामने, इतना ही नहीं, नीलिमा दीदी की सासूमां को भी चोद डाला" फ़िर मैंने मां को विस्तार से सब बताया. बताते बताते मां को चोदना मैंने जारी रखा.

वो ऐसे गरमायी कि चूतड़ उछालने लगी. मैंने पिछले दिनों में इतनी चुदाई की थी कि लंड झड़ने को बेताब नहीं था. आराम से बिना झड़े मां को चोदता रहा. उसे दो बार झड़ाया, फ़िर झड़ा.

मां आखिर लस्त होकर सुख से रोने लगी "चलो, मेरी बेटी खुश तो है! मैं ही जानती हूं कि ये चूत की खुजली क्या जानलेवा होती है. और नीलिमा तो मुझसे भी बढ़ कर है. चलो मेरा नाम रोशन कर रही है ससुराल में"

मैंने केला उठा लिया और खाने लगा. मां की चूत के रस से लिबलिबा केला खाने में मुझे बचपन से मजा आता था. जब छोटा था तब मां कई बार जान बूझ कर मुझे खिलाती थी, बिना बताये कि उस केले से उसने किया क्या है. अपने छोटे से बेटे को अपनी चूत का रस चखा कर मन ही मन खुश होती थी. बाद में जब मैं जवान हुआ और मां और दीदी को चोदने लगा, तब मेरे और दीदी के सामने ही केले से मुठ्ठ मारती थी और हम दोनों को खिलती थी.

केला खाते हुए मैंने कहा "असली बात तो तुमने सुनी ही नहीं. समधनजी ने हम दोनों को बुलाया है, दो हफ़्ते के लिये उनके साथ रहने को कहा है."

मां चकरा कर बोली "मैं क्या करूंगी उधर बेटा? सब के सामने अपनी बिटिया से कुछ कर भी नहीं पाऊंगी. तू यहीं ले आता तो अच्छा होता"

"अरे मां, तू कितनी भोली है. उन्होंने बुलाया है हमें अपनी रास लीला में शामिल करने को. तेरे बारे में सुनकर तो वे सब लोग मेरे पीछे ही लग गये कि जाओ, मां को ले आओ"

(c) 2008, www.antarvasna.com

"अरे उन्हें पता चल गया हमारे बारे में? कुछ गड़बड़ न हो जाये बेटा" मां चिंतित होकर बोली.

"खुद दीदी ने सब को बताया है कि उसकी मां कितनी सुंदर और रसीली है. मेरे बारे में भी बताया तो सब ने मेरे हुनर तो देख लिये. अब सब को तुझसे मिलना है, खास कर अचलाजी को, तेरी समधन को. बड़ी मतवाली हैं वे मां. और जीजाजी और जेठजी भी आस लगाये बैठे हैं कि उनकी सास आयें तो उनकी खातिरदारी करें"

मां को समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करे. मन में खुशी के लड्डू फ़ूल रहे थे पर थोड़ी परेशान भी थी. आज तक उसने बस अपने परिवार में, अपने बेटे और बेटी से संभोग किया था. अब दूसरों के साथ करने में जहां वह सकुचा रही थी वहीं गरमा भी रही थी. मैंने समझाया कि यहां तो बस एक लंड मिलता है, वहां तो दो और नये लंड मिलेंगे. फ़िर बेटी के अलावा एक और बुर भी मिलेगी मजा करने को.

मां जल्द ही मान गयी. इतना ही नहीं, फ़िर गरम होकर मुझपर चढ़ बैठी. जब वह मुझे ऊपर से चोद रही थी तो मैंने उसे बताया कि समधन ने क्या कहा था. "मां, अभी चोद ले, अब दो दिन उपास करना. उधर वे लोग भी करने वाले हैं. अब दावत शुरू होगी जब हम वहां पहुंचेंगे, और उपास के बाद और जायका आयेगा साथ साथ खाने का.

दो दिन हमने आराम किया. कठिन था पर मां ने अपने आप पर काबू रखा. जब सामान क्या ले जाना है इसकी तैयारी करने लगी तो मैने बताया "अम्मा, बस दो जोड़ी कपड़े ले चलेंगे. वे भी नहीं लगेंगे. वहां कौन हमे कपड़े पहनने देगा?" मां शरमा गयी. चहरा लाल हो गया. इतने दिन बाद मां को शरमाते हुए देख कर बहुत अच्छा लगा.

हम शनिवार सुबह निकलकर दोपहर को वहां पहुंचे. हमारा स्वागत जोरदार हुआ. जीजाजी और जेठजी ने मां के पैर छुए, इतना ही नहीं, लेट कर उसके पांव चूम भी लिये. मां सकुचा गयी, वैसे मां के पैर बहुत सुंदर हैं, एकदम गोरे और नाजुक, किसी का भी मन करे उन्हें प्यार करने को, मैं तो अक्सर खेलता रहता हूं मां के चरणों से.

दीदी मां से गले मिली. शरमायी हुई मां ने बस उसका गाल चूम कर उसे अलग कर दिया. "अरे समधनजी, इतने दिन बाद मिली हो, जरा बेटी की बलायें लो, उसे प्यार करो" अचलाजी ने मजाक में कहा. जीजाजी बोले "अरे मां, वे अपनी बेटी से अकेले में मिलना चाहेंगी"

अचलाजी मां को गले लगाकर बोलीं. "अब तो सब के सामने ही मिलना पड़ेगा भई. हम भी तो देखें मां बेटी का मिलन" फ़िर अचलाजी ने मां को चूम लिया. पहले गालों पर और फ़िर होंठों पर. कस कर उसे बांहों में जकड़कर वे मां की पीठ को प्यार से सहलाने लगीं. मां शरम से पानी पानी हो रही थी.

रतनजी बोले "अरे अम्मा, अभी से न जुट जाओ, इन्हें आराम कर लेने दो. नीलिमा, इनको अपने कमरे में ले जाओ. आप लोग नहा धो कर आराम कर लो"

हम लोग नीलिमा के कमरे में गये. वहां का बड़ा पलंग देख कर मां भोंचक्की हो गयी. "इतना बड़ा पलंग बेटी?"

"मां, सब साथ सोते हैं इसपर, अब तो तुम दोनों भी आ गये हो" नीलिमा ने मां की चूंची दबाते हुए कहा. फ़िर कस कर मां को चूम लिया. मां भी उस से लिपट गयी और दोनों आपस में बुरी तरह चूमा चाटी करने लगीं. मां बार बार कह रही थी "मेरी बच्ची, मेरी बेटी, मैं तो तरस गयी तेरे साथ को." मैंने मजाक किया "उसके साथ को या उसकी बुर को?"

नीलिमा दीदी ने किसी तरह उसे अलग किया. "रुक जा मां, मन तो होता है कि अभी तेरी बुर में घुस जाऊं पर ये

(c) 2008, www.antarvasna.com

लोग मुझे मार ही डालेंगे. दो दिन से सब तेरा इंतजार कर रहे हैं. सबकी चूतें गरम हैं और लंड फ़नफ़ना रहे हैं. आज रात तक रुक जाओ. '' कहकर नीलिमा चली गयी. अपनी मां बहन की चूमा चाटी देख कर मेरा भी खड़ा हो गया था पर मैंने किसी तरह सब्र किया.

हम नहाये और सो गये. देर शाम को उठे. नीलिमा चाय ले आयी. उसने खूब सिंगार किया था और बड़ी मस्त साड़ी और चोली पहने थी. उसने मां को भी कहा कि ठीक से तैयार हो ''अम्मा, मैं ये शिफ़ान की साड़ी लाई हूं, पहन लेना. और तेरी नाप की ये काली ब्रा और पैंटी है, वो भी पहन ले. तू तो अपने पुराने कपड़े साथ लायी होगी''

मां ने मेरी ओर देखा ''इसी ने कहा था कि कपड़े मत ले चल'' मैंने दीदी को कारण बताया तो दीदी मुस्कराकर बोली ''बात ठीक है, आज के बाद अम्मा इस कमरे के बाहर कम ही निकलेगी. और यहां पूरी नंगी रहेगी. इनके कमरे के बाहर कतार होगी इनका प्रसाद पाने वाले लोगों की. पर आज सब के सामने मैं अपनी ससुराल में दिखाना चाहती हूं कि अम्मा कितनी सुंदर है.''

तैयार होकर हम नीचे खाने आये. सभी सज धज कर बैठे थे. मैंने रतनजी ने और जीजाजी ने तो बस सिल्क के कुर्ते पाजामे पहने थे. अचलाजीने सलवार कमीज पहनी थी. उनके मोटे बदन पर भी वह फ़ब रही थी क्योंकि शायद कस के ब्रा बांधी थी इसलिये उनकी उस तंग कमीज में से उनके विशाल चूचियां तो पहाड़ों जैसी तन कर खड़ी थीं. तंग सलवार में से उनके मोटे चूतड़ उभर कर दिख रहे थे.

दीदी साड़ी ब्लाउज़ में बहुत खूबसूरत लग रही थी. स्लीवलेस ब्लाउज़ के कारण उसकी गोरी चिकनी बाहें निखर आयी थीं. मां तो आज ऐसी लग रही थी कि मेरी भी नजर नहीं हटती थी, लगता था कि क्या यही मेरी मां है? बात यह थी कि अब मां को कपड़ों में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी. उसे तो एक बात अच्छी लगती थी कि अपने बेटे और बेटी से चिपट कर कैसे बेडरूम में टाइम बिताया जाये. इसलिये वह कपड़ों पर ज्यादा ध्यान नहीं देती थी. आज बहुत दिन बाद वह ठीक से सजी थी.

मां ने जूड़ा बांध लिया था और उसमें वेणी गूंध ली थी. दीदी के जिद करने पर हल्का लिपस्टिक लगा लिया था जिससे उसके होंठ गुलाब की कली जैसे मोहक लग रहे थे. लो कट ब्लाउज़ में से उसकी काली ब्रा उसके गोरे रंग पर मस्त जच रही थी. मां का बदन अब भी काफ़ी छरहरा था, उसकी चूचियां छरहरे बदन के कारण और उठ कर दिखती थीं.

''आहा, हमारी समधनजी तो परी हैं एकदम. नीलिमा, ये तेरी मां नहीं बड़ी बहन लगती हैं. अरे इनकी तो भी शादी करा दो ऐसा रूप है इनका'' अचलाजी ने चुटकी ली. वे भूखी मदभरी आंखों से मां के रूप को घूर रही थीं.

''आज रात शादी भी हो जायेगी मां, सब के साथ, और फ़िर सुहाग रात भी मना लेंगे.''रतनजी ने कहा.

मां शरमाती रही पर मन में बहुत खुश थी. उसका हाथ बार बार अपनी कमर के नीचे साड़ी ठीक करने पहुंच जाता. मैं समझ गया, चूत कुलबुला रही थी और न रह कर मां उसे बार बार हाथ लगा रही थी. खाने भर ऐसा ही हंसी मजाक चलता रहा. खाने के बाद सब दीदी के कमरे में इकठ्ठ हुए.

अचलाजी ने अपने बेटों को कुछ इशारा किया. वे दोनों जाकर दीदी के कपड़े उतारने लगे. खुद अचलाजी मेरे पास आयीं और मेरे कपड़े उतार दिये. फ़िर हम दोनों को कुरसी में नंगा बिठा कर अचलाजी की चार पांच बड़ी साइज़ की ब्रेसियरों से बांध दिया गया

दीदी हंस रही थी पर कुछ नाराज थी. उसे पता था कि क्या होने वाला है ''अरे छोड़ो मेरे को, ये क्या बचपना है''

(c) 2008, www.antarvasna.com

अचलाजी बोलीं. "बेटी, अब तमाशा देखो और जरा और मस्त हो लो. तुम दोनों को इसलिये बांध दिया कि कोई दखलंदाजी न करो. अब समधनजी के बेटे और बेटी के सामने हम उनको नंगा करेंगे और फ़िर चोदेंगे. अपने बच्चों के सामने चुदती मां को देखने में जो मजा आयेगा वो और किसी में नहीं"

फ़िर उन्होंने अपने अपने कपड़े निकाले. मां पलंग पर बैठ कर सहमी सहमी हमें देख रही थी. जीजाजी और रतनजी के कसे नंगे बदन और उनके तन्नाये हुए लंड देखकर उसकी आंखें पथरा गयीं. और जब उसने अचलाजी का भरा पूरा मांसल बदन देखा तो अपने आप को न रोक पायी. उसका हाथ अपनी बुर पर चला ही गया. कभी वह मेरे लंड को देखती, कभी दीदी की नंगी जवानी को और कभी उन मां बेटों के नंगे शरीर को.

अचलाजी उसके पास जाकर बैठीं और उसके साड़ी खोलने लगीं. जीजाजी ने उसका ब्लाउज़ उतारा और रतनजी उसका पेटीकोट उतारने लगे. मां शरमा कर नहीं नहीं करने लगी

"अरे समधनजी, अपना यह रूप अपने बच्चों पर इतने दिन लुटाया है, अब जरा हमें भी चखने दो. तुम्हारी बेटी जब से इस घर की बहू बनकर आयी है, और अपनी मां के जोबन के बारे में बताया है, तब से तुम्हारे इन गदराये फ़लों को खाने को हम मरे जा रहे हैं. अब नखरा न करो"

मां चुपचाप अपने कपड़े उतरवा रही थी. काफ़ी गरम हो गयी थी. थोड़ी शरमाते हुए बोली "आप मुझसे बड़ी हैं, मुझे समधनजी क्यों कहती हैं? अपनी छोटी बहन समझिये. मुझे मेरे नाम से बुलाइये – बीना"

मां और कुछ बोलना चाहती थी पर अचलाजी ने उसके मुंह को अपने मुंह से बंद कर दिया. रतनजी मां का पेटीकोट उतार कर उसकी गोरी मांसल जांघों को चूम रहे थे. "वाह क्या जांघें हैं हमारी सासूजी की, जांघें इतनी रसीली हैं तो उनके बीच का खजाना क्या रसीला होगा!"

अब तक जीजाजी ने मांका ब्लाउज़ निकाल डाला था और ब्रा के ऊपर से ही मांकी चूचियां दबा रहे थे. "मस्त मम्मे हैं अम्मा, स्पंज के गोले लगते हैं" वे बोले.

रतन जी ने अब तक मां के पैंटी भी उतार दी थी और उसकी झांटों पर हाथ फ़ेर रहे थे. "नीलिमा, अब समझ आया तेरी झाटें इतनी घनी और घुंघराली कैसे हैं, बिलकुल अपनी मां पर गयी है"

मां को पूरा नंगा करके सबने पलंग पर लिटा दिया और चढ़ बैठे. "बड़ी लजीज चीज है अम्मा हमारी सासूजी, चोद डालें?" जीजाजी मां के मम्मे मसलते हुए बोले.

मैं चिल्ला उठा मां. मां की आंखों की कामना मुझे सहन नहीं हो रही थी, मैं जानता था कि उसका क्या हाल होगा "अरे चोद डालिये जीजाजी, उसे ऐसे न तड़पाइये. बेचारी कई दिनों की भूखी है, उसे आदत नहीं है भूखा रहने की"

दीदी भी बोल पड़ी "अजी सुनो, अब मुझे खोल दो, अम्मा की चूत का स्वाद लिये महनों हो गये, पहले मुझे चूस लेने दो, फ़िर चोदना"

अचलाजी मुस्करायी और बोलीं. "हल्ला न करो, सबको चखने मिलेगी ये मिठाई. अभी चोदो नहीं, मुंह से स्वाद लो इनके जोबन का. पेट भर के चूस लो, फ़िर चोद लेना. अब तुम दोनों जरा हटो, पहला हक मेरा है"

अचलाजी मां के पैरों के बीच में बैठ गयीं और उसकी चूत को उंगली से खोल कर देखने लगी. "एकदम गुलाबी और रसीली है." उंगली अंदर डाल कर उन्होंने अंदर बाहर की और फ़िर चाट कर बोलीं "शहद है शहद,

(c) 2008, www.antarvasna.com

बीना रानी, अब जरा हमारी भूख मिटाओ. चूत में ढेर सा शहद है ना? हम सब को चखना है" फ़िर झुक कर मां की बुर में मुंह डाल कर लेट गयीं. वहां उनकी जीभ चली और यहां मां तड़प कर चूतड़ उछालने लगी. "दीदी बहुत अच्छा लग रहा है. हाय मेरी बेटी के भी क्या भाग हैं जो ऐसी सास मिली है"

जीजाजी अब मां के चुंबन ले रहे थे, उसके रसीले मुंह को चूसते हुए मां के मम्मे मसल रहे थे. "मांजी, लौड़ा कहां लेंगी मेरा? मुंह में या चूत में? आपका यह दामाद आज आपको खुश कर देगा"

"मुझे चोद डालो बेटे, अब न तड़पाओ. तुम्हारी मां जो जुलम कर रही है वो मैं सह न पाऊंगी" मां हाथ में जीजाजी का लंड पकड़कर बोली. अब उसकी पूरी शरम खतम हो गयी थी.

रतनजी मां के पेट पर हाथ फ़ेरते हुए दूसरे हाथ से उसके चूतड़ सहला रहे थे "मैंने तो अपनी जगह बुक कर ली मांजी. आपके इन मतवाले गद्दों के बीच"

मां थोड़ी घबराई. रतन के लंड को टटोल कर बोली "बेटा, ऐसा मत करना, मैं सह नहीं पाऊंगी, तेरा तो मेरे बेटे से भी बड़ा है लगता है"

रतनजी मां के चूतड़ों को मसलते हुए बोले "अरे नहीं मांजी, आपके बेटे का लंड बहुत मस्त है, पर मैंने सुना है कि ये आप की बहुत मारता है, तो मेरे लंड से आप को कोई तकलीफ़ नहीं होगी."

मां फ़िर बोली "मुझे दुखेगा मेरे बेटे, आओ मैं चूस देती हूं"

मैंने रतनजी को आंख मारी कि परवाह मत करो. दीदी अब गरम होकर अपने चूतड़ कुरसी पर रगड़ रही थी.

उधर जीजाजी ने मां का सिर अपनी गोद में लिया और उसके मुंह में लंड डाल दिया. मां आंखें बंद करके चूसने लगी. अचलाजी अब मां की जांघें पकड़कर उसकी बुर चूस रही थी. मां को झड़ाकर उन्होंने उसके रस को चाटा और फ़िर उठ कर रतन को कहा कि अब वह चख ले. तीनों ने मिलकर बारी बारी से मां की चूत चूसी. इस बीच लगातार मां की चूचियां वे दबा रहे थे. बीच बीच में कोई उन्हें मुंह में लेकर चूसने लगता.

फ़िर दोनों भाई मां को उठाकर हमारे पास लाये. मां अब तक दो तीन बार झड़कर मस्त हो गयी थी. उसकी बहती बुर से पता चल रहा था. मां को वैसे ही उठाये हुए पहले वे दीदी के पास गये और दीदी का मुंह मां की चूत पर लगा दिया "ले नीलिमा, देवी मां का प्रसाद ले ले, जल्दी चख, फ़िर तेरे भाई को चखाना है"

दीदी और मुझे मां की बुर का स्वाद देकर वे मां को फ़िर पलंग पर ले गये. "चलो अब चोदो साली को" अचलाजी ने कहा. मां उनकी ओर देखने लगी. फ़िर उसे याद आया कि मैंने बताया था कैसे ये लोग गाली गलौज करते हैं.

जीजाजी मां पर चढ़ गये और उसकी बुर में लंड डाल दिया. फ़िर वे नीचे हुए और रतनजी ने चढ़ कर मां की गांड में लंड पेलना शुरू किया. मां कराह उठी "नहीं बेटे, दुखता है, सच में दुखता है, विनय को मैं हमेशा कहती हूं पर ये नहीं मानता, तू रुक ना, दामाद जी के बाद मुझे चोद लेना, मेरी गांड मत मारो"

अचलाजी ने अपनी टांगें फ़ैलकर मां के मुंह को बुर से लगा लिया और कस कर टांगों में उसका सिर दबा लिया. फ़िर मां के मुहे पर धक्के मारते हुए बोलीं. "तू पेल रतन. इसकी बात मन सुन. आखिर ससुराल में पूरी आवभगत करनी है, ऐसे थोड़े एक छेद छोड़ देंगे"

रतनजी ने मां के चूतड़ पकड़कर अपना लंड उसके गुदा के अंदर उतार दिया. मां छटपटाई पर उसका मुंह

(c) 2008, www.antarvasna.com

अचलाजी की बुर में दबा होने से बस गों गों करके रह गयी. लंड अंदर उतार कर रतनजी ने उसकी गांड मारना शुरू कर दी.

अगले आधे घंटे हम दोनों बंधे भाई बहन के आगे उन तीनों ने मां को पटक पटक कर तीनों तरफ़ से चोदा. बीच में वे छेद बदल लेते. मां पर वे ऐसे चढ़े थे जैसे शैतान बच्चे गुड़िया को तोड़ने मरोड़ने में लगे हों. पीछे से मां को चिपट कर गांड मारते हुए जेठजी मां के स्तनों को कस के दबा और कुचल रहे थे जैसे भोंपू हों. अचलाजी ने मां का सिर इस तरह से जांघों में दबा लिया था जैसे दबा कर कुचल देना चाहती हों.

मेरी लंड मां की होती ठुकाई देखकर सनसना रहा था. दीदी भी भयानक उत्तेजना में गालियां दे रही थी "अरे भोसड़ीवालो, मां को छोड़ो, मेरी ओर ध्यान दो, साले जेठजी, आज तुझे अपनी बुर में न घुसा लिया तो कहना. और मेरी चुदैल सासूमां, आज तेरी बुर को चूस कर मैं आम जैसा पिलपिला कर दूंगी. सब चुदाई भूल जायेगी."

उसकी बात अनसुनी करके तीनों मां को चोदते रहे. आखिर जब वे झड़े और अपने अपने लंड और चूत मां के बदन से अलग करके उठे तो मां थकी हुई पलंग पर पड़ी रही. कुछ बोली नहीं पर जब उसने हमारी ओर देखा तो उसके चेहरे पर एक गहरी तृप्ति थी. मां के चेहरे पर मैंने बहुत दिनों में यह सुख देखा था. मैंने दीदी को कहा "देख दीदी, मां को क्या खलास किया है तेरे ससुराल वालों ने मिलकर"

अचलाजी मेरे पास आयीं और बोलीं. "अब तुम दोनों मां के पास जाओ, उसकी सेवा करो. उसके छेद से जो रस बह रहा है वह पाओ. तब तक हम आराम करते हैं"

जीजाजी उठकर मेरे पास आये और अपना झड़ा लंड मेरे मुंह में देते हुए बोले "पहले ये चख लो विनय, तेरे पसंद का है, तेरी दीदी को चोदने वाले उसके पति का और तेरी मां का" मैंने मन लगाकर उनका झड़ा लंड चूसा. उधर जेठजी दीदी को लंड चुसवा रहे थे.

हमारे हाथ पैर खुलते ही हम भाग कर मां के पास गये. दीदी मां की चूत में घुस गयी और मैंने उसे पलट कर मां के चूतड़ों के बीच अपना मुंह डाल दिया. दोनों छेदों से रस बह रहा था. मां सीत्करी भरते हुए मुझे और दीदी को अपने बदन से चिपटाकर बोली "मेरे बच्चों, आज मैं निहाल हो गयी, बहुत प्यार से चोदा मुझे समधन और उनके दो बेटों ने. तेरी ससुराल याने स्वर्ग है बेटी, तू बड़ी भाग्यवान है जो ऐसा घर तुझे मिला"

मां की गांड खाली करके मैं मां को पलटाकर चढ़ गया और उसकी गांड में लंड डाल दिया. फ़िर उसपर लेट कर उसकी गांड मारने लगा. मेरा कस के खड़ा था और मैं बहुत उत्तेजित था. लगता था कि मां की इतनी मारूं कि फ़ाड़ डालूं. दीदी भी मां से सिक्सटी नाइन करने में जुट गयी थी. बेचारी बहुत देर से गरम थी, मां की जीभ चूत में जाते ही झड़ गयी.

कुछ देर बाद अचलाजी, रतनजी और जीजाजी उठकर पलंग पर आ गये. अचलाजी बोलीं "आज की रात बहू की मां के लिये है बेटो. इन्हें खूब चोदो, इनका कोई छेद, इनके शरीर का कोई भाग अनछुआ न रहे एक मिनिट के लिये भी. रतन चल तू आजा और चूत में लंड डाल, रजत बेटे, अपनी सास को लंड चुसवाओ. बहू, चल अपन दोनों मिलकर इनके जोबन को गूंधते हैं." उन्होंने और दीदी ने मां की एक एक चूंची मुंह में ली और उसे चूसते हुए मसलने लगीं.

हम सब मां के शरीर को घेरकर उसे भोगने लगे. ऐसा लग रहा था जैसे कई शिकारी मिलकर एक शिकार पर झपट पड़े हों. पर मां के लिये यह बहुत मीठा शिकार था. जिस तरह से वह तड़प रही थी और हाथ पैर फ़ेक रही थी, उससे जाहिर था कि उससे यह सुख गवारा नहीं हो रहा था. हमारे धक्कों से मां का शरीर इधर उधर हो रहा था. पलंग हिल रहा था जैसे तूफ़ान आ गया हो.

(c) 2008, www.antarvasna.com

मां को हमने एक पल नहीं छोड़ा न उसके मुंह को खुलने दिया कि वह कुछ कह सके. लंड झड़ते ही अचलाजी या दीदी मां का मुंह चूसने लगतीं या उसमें चूत लगा देतीं. फ़िर जब किसीका लंड खड़ा हो जाता तो वह मां के मुंह में घुसेड़ देता. वैसे ही जब मां की गांड या चूत लंड निकलने से खाली होती तो सब उन छेदों पर टूट पड़ते, चूस कर साफ़ करते और फ़िर कोई अपना लंड खाली छेद में डाल देता.

आखिर हम सब जब पूरी तरह से निढाल हो गये तब हमने मां को छोड़ा. कोई कहीं लुढ़क गया कोई कहीं. मां अब चुद चुद कर बेहोश हो गयी थी. उसके मम्मे मसले कुचले जाने से लाल हो गये थे, पूरे गोरे बदन पर चुदाई और मसलने के निशान पड़ गये थे.

सुबह जब आंख खुली तो देखा कि मां अचलाजी की गोद में सिर रखकर रो रही थी. दीदी, जीजाजी और जेठजी गायब थे, शायद नहाने चले गये थे. मुझे लगा कि मां को दर्द हो रहा होगा, कल रात हमसे ज्यादती हो गयी.

अचलाजी मां को चूमती हुई बोलीं. "हमारा तो यह फ़र्ज़ था समधन, तुम्हारी जैसी खूबसूरत औरत रोज थोड़े मिलती है, ऐसी समधन या सास सब बच्चों को कहां नसीब होती है. तुम तो अप्सरा हो. बहुत मजा लिया बच्चों ने, भरपूर स्वाद पाया तुम्हारे बदन का"

मां सिसकते हुए बोली "मैं निहाल हो गयी दीदी. इतना सुख मिला कि स्वर्ग में भी नहीं मिलेगा. अब तो बस आप लोगों की ऐसी ही सेवा होती रहे मुझसे, और मेरे बच्चों से, यही मनाती हूं मैं" याने मां सुख से रो रही थी. मुझे काफ़ी गर्व हुआ, क्या चुदैल छिनाल नारी थी मेरी मां!

"अब आज आराम करो दिन भर सब कोई. सीधे रात को इकठ्ठे होंगे. अभी तो और जान पहचान होना है हमारे तुम्हारे परिवार में. विनय बेटे, तू भी आराम कर ले, आज रात को तेरा खास काम है" अचलाजी बोलीं.

मैं और मां दिन भर सोते रहे. बस बीच में नहाने खाने को उठे. शाम तक हमें फ़िर ताजगी महसूस होने लगी. बाकी सब भी आराम करके फ़्रेश लग रहे थे. सब मां के साथ मजाक कर रहे थे

"मांजी, कल कैसी लगी हमारी आवभगत? कहें तो आज वैसी ही खातिर आगे चालू रखें?" रतनजी ने पूछा.

"कल जरा जल्दबाजी मच गयी मांजी, आपके रूप का ही यह प्रताप है. आज आराम से आप की सेवा कर सकते हैं हम सब मिलके" जीजाजी मुस्कराते हुए बोले.

"बड़े आये मेरी मां की सेवा करने वाले! मुझे तो मां से ठीक से मिलने भी नहीं दिया तुम लोगों ने, आज मां सिर्फ़ मेरी है मेरी" नीलिमा दीदी मचल कर बोली.

मां खुश थी. थोड़ा शरमाते हुए बोली "बेटे, मैं क्या कहूं, कल तो तुम लोगों ने मुझे स्वर्ग में पहुंचा दिया. पर क्या नोचा है मुझे, मेरा बदन अब तक दुख रहा है. वैसे मेरी बेटी की ससुराल वालों के लिये मैं कुछ भी करने को तैयार हूं, मुझे बहुत आनंद दिया है तुम लोगों ने मिलकर"

अचलाजी हंसते हुए बोलीं. "आज अब थोड़ा अलग होगा. मजे ले लेकर काम किया जायेगा. बीना, तेरा बेटा विनय बड़ा खूबसूरत है, पिछली बार बस दो दिन रहा, ठीक से उसे जान भी नहीं पाये हम लोग, खास कर मेरे बेटे. आज सोचते हैं कि जान पहचान पूरी कर लें, हम दोनों की और साथ में बहू भी, और रतन, रजत और विनय की आपस में"

रतनजी ने मुझे आंख मार कर कहा "बिलकुल ठीक है अम्मा. विनय को तो ठीक से चख भी नहीं पाये हम लोग"

(c) 2008, www.antarvasna.com

मेरे मन में मीठे उलझन होने लगी थी. मैं समझ गया कि क्या होने वाला है. पर अब मुझे मजा आने लगा था. मैंने भी बोल दिया "हां, मजा आयेगा मांजी. पर क्या हम लोग अलग कमरे में जाकर गप्पें मारें और आप औरतें दूसरे कमरे में जायेंगी?"

"अरे नहीं, ये ट्रेन थोड़े ही है लेडीज़ और जेंट कंपार्टमेन्ट वाली, सब साथ साथ देखेंगे एक दूसरे को" अचलाजी बोलीं.

रात को हम सब फ़िर से दीदी के कमरे में इकठ्ठे हुए. औरतें एक दूसरे के कपड़े उतारने लगीं. जीजाजी और रतनजी फ़टाफ़ट नंगे हो गये और मिलकर मेरे कपड़े उतारने लगे. साथ साथ वे मुझे चूमते जाते. "विनय राजा, आज आयेगा मजा, आज तुझे सेक्स का सब बचा हुआ आनंद भी मिल जायेगा, जो तूने आज तक नहीं लिया."

जीजाजी मेरी छाती सहलाते हुए मेरे निपलों को चूम कर बोले "भैया, बड़ा चिकना लड़का है, एकदम मस्त है"

"तू भी कम नहीं है रजत, आ विनय, आज ठीक से देख ले कि तेरी बहन का पति कितना चिकना जवान है" रतनजी मुझे गोद में लेकर सोफ़े में बैठते हुए बोले. जीजाजी मेरे सामने बैठ कर मेरा लंड चूसने लगे.

"छोटे, तू तो विनय के लंड पर मर गया है, अभी से सोच ले, कहां लेगा?" रतनजी बोले और फ़िर अचानक मेरा सिर अपने हाथों में लेकर अपनी ओर मोड़कर मेरे होंठों को चूसने लगे. पहली बार कोई मर्द इस तरह से मुझे चूम रहा था. मैंने शुरू में अपना मुंह बंद रखा पर फ़िर मुंह खोल कर जेठजी की जीभ चूसने लगा. वे मेरे निपलों को उंगलियों में लेकर बड़े मस्त तरीके से मसल रहे थे. उनका तन्नाया लंड मेरी पीठ पर रगड़ रहा था.

उधर अचलाजी और दीदी मिलकर मां के बदन का रस चूसने में लग गये थे. दीदी मां की चूत से लग गयी थी और अचलाजी मां के होंठ चूस रही थीं. मां ने उन्हें कुछ कहा तो अचलाजी मुस्कराकर मां का सिर अपनी जांघों में लेकर लेट गयीं. "जरूर चूसो बीना, तुझे नहीं चुसाऊंगी तो किस को चुसाऊंगी"

"उठ छोटे, अब नहीं रहा जाता, काम की बात करें, बोल क्या करेगा विनय के साथ" रतनजी ने जीजाजी से पूछा.

"भैया, मैं तो इसे अंदर लूंगा आज, जब से विनय को देखा है मेरी गांड कुलबुला रही है" जीजाजी मेरे लंड को मुंह से निकालकर बोले.

"वो तो ठीक है पर मुझे तो विनय के गोरे गोरे चूतड़ चाहिये अपने आगोश में. बोल विनय तैयार है?" रतनजी बोले. मैं अब वासना से थरथरा रहा था. रतनजी का लंड गांड में लेने की कल्पना से डर भी लगता था और उत्तेजना भी होती थी.

"बहुत बड़ा है जेठजी, दर्द तो नहीं होगा?" मैंने पूछा.

"अरे मेरी जान, तुझे दर्द नहीं होने देंगे, मस्त मख्खन का इंतजाम करके रखा है. पर बात ठीक है, पहली बार ले रहा है तू, ऐसा कर, पहले रजत का ले ले, मुझसे छोटा है ना! रजत आ जा, विनय को तैयार कर ले, पहली बार मरा रहा है, धीरे धीरे मारना. विनय, तू पहले मरा ले, झड़े बिना, बहुत आनंद पायेगा. गांड मरवाने का असली आनंद तभी आता है जब लंड खड़ा हो" रतनजी अब खुल कर बोल रहे थे. मेरी सारी शरम दूर हो गयी थी, मैं भी उत्सुक था कि देखें कैसा लगता है. इतने सुंदर हैंडसम मर्दों के साथ मैं कुछ भी करने को अब तैयार था.

रतनजी ने मुझे पलटा और मेरी गांड चूसने लगे. "छोटे, क्या माल है यार! मुझे तेरी याद आ गयी जब मैंने पहली बार तेरी मारी थी.

(c) 2008, www.antarvasna.com

रतनजी ने मुझे सोफ़े का सिरहाना पकड़कर झुक कर खड़ा किया. रजतजी मेरे गुदा में मख्कन मलने लगे. साथ साथ वे फ़िर पीछे खड़े हो गये. "भैया, तुम विनय का लंड सभालो"

जेठजी ने नीचे बैठकर मेरा लंड मुंह में ले लिया और मेरे चूतड़ पकड़कर फ़ैला दिये. जीजाजी ने अपना लंड पेल दिया. सुपाड़ा अंदर गया तो तकलीफ़ हुई. जीजाजी रुक रुक कर पेलने लगे, जल्द ही उनका पूरा लंड मेरी गांड में था. मुझे उतना दर्द नहीं हुआ जितना मैंने सोचा था. बात यह है कि कई बार मैंने अकेले में गांड में मोमबत्ती डाल कर देखी थी. जीजाजी का बहुत बड़ा भी नहीं था, रतनजी का होता तो मैं जरूर चिल्ला उठता.

थोड़ा रुक कर जीजाजी बोले "संभाल विनय, अब चोदता हूं" और खड़े खड़े मेरी गांड मारने लगे. मेरा शरीर हिलने लगा. रतनजी मन लगाकर मेरा लंड चूस रहे थे. जीजाजी एक सधी लय में मेरी मार रहे थे. पच पच पच आवाज आ रही थी.

"बीना उधर देख, तेरे बेटे को मेरे बेटे कैसे चोद रहे हैं" अचलाजी ने कहा. मां ने मेरी ओर देखा. मेरी आंखों की खुमारी देख कर उसे बहुत अच्छा लगा "कितना खुश लग रहा है मेरा बेटा. सच बताऊं दीदी, नीलिमा के साथ चुदाई करते हुए मुझे बार बार लगता थ कि जैसे मुझे मेरी बेटी के साथ यह सुख मिल रहा है, वैसे ही मेरे बेटे को मिले, उसके भाग हैं जो इतने अच्छे खूबसूरत मर्द उसे मिले मजा करने को. बेटे, पूरा मजा ले ले, आराम से चुदवा"

जीजाजी ने बहुत देर मेरी मारी. "क्या गांड है भैया, एकदम टाइट, विनय, अब मेरी मार कर देखना, तेरा मां या दीदी से ज्यादा मेरी गांड में तुझे मजा आयेगा."

कुछ देर में वे झड़ गये. पहली बार गरम वीर्य की फ़ुहार गांड में छूटी तो मैने समझा कि औरतों को भी क्या मजा आता होगा. मेरा लंड और तन्ना गया था. रतनजी ने बड़ी सफ़ाई से मुझे मस्त रखा था, मेरा लंड चूस चूस कर पर झड़ाया नहीं था.

जीजाजी ने लंड निकाला और जाकर पलंग पर ओंधे लेट गये. "अब आजा विनय, मजा कर ले"

रतनजी ने मुझे पलंग पर चढ़ाया. "चढ़ जा विनय, मख्खन की जरूरत नहीं लगेगी, मखमली गांड है मेरे भाई की, तेरी ही तरह"

जीजाजी के गोरे चूतड़ बहुत खूबसूरत थे. मैं उन्हें चूमने लगा, फ़िर गांड में मुंह लगाकर चूसने लगा "असली चोदू है तू विनय, गांड का शौकीन लगता है. वैसे रजत की गांड बहुत मस्त है, तेरी देखूं, स्वाद रजत से कम नहीं होगा" कहकर रतनजी मेरी गांड चूसने लगे.

मैंने जीजाजी के ऊपर चढ़ कर अपना सुपाड़ा उनके गुदा पर रखा और पेल दिया. एक बार में आधा लंड अंदर चला गया. मैं अचरज में था. इतनी मुलायम तो मेरी मां या दीदी की भी गांड नहीं थी. एक और धक्के में मैंने लंड पूरा गाड़ दिया. जीजाजी चूतड़ हिलाने लगे "मजा आ गया विनय, तेरे इस कसे लौड़े को लेने की मैं उसी दिन से सोच रहा था जब नीलिमा ने तेरे बारे में बताया था. अब पेल अंदर बाहर" मैं जीजाजी की गांड चोदने लगा.

"एक मिनिट रुक राजा, अब मुझे भी अंदर ले ले पहले, फ़िर साथ साथ मारेंगे" कहकर जेठजी ने मेरे चूतड़ फ़ैलाये और लौड़ा पेलने लगे. अब मुझे समझा कि गांड मराना क्या होता है. उनका लंड बड़ा था, ऐसा लग रहा था कि गांड फ़ट जायेगी. मैं दर्द से सी सी करने लगा तो उन्होंने पेलना बंद कर दिया और मेरे निपल मसलने लगे "बस, अब नहीं होगा दर्द, पहली बार तो थोड़ा होता है, औरतों को कैसे भी होता है चुदाते समय"

(c) 2008, www.antarvasna.com

जीजाजी अपनी गांड सिकोड़ सिकोड़ कर मेरे लंड को मस्त कर रहे थे. दो मिनिट बाद रतनजी फ़िर पेलने लगे, इस बार दर्द कम हुआ और उनका लंड मेरे चूतड़ों के बीच पूरा समा गया. मुझे अजीब सा लग रहा था, गांड ठस के भरी हुई थी, ऐसा लग रहा था कि पेट तक लंड चला गया है. पर मजा भी आ रहा था.

"चल अब चोदता हूं तेरे भाई की गांड, बहू देख रही है ना?" नीलिमा दीदी को रतनजी बोले. फ़िर मां की ओर मुड़ कर बोले "मां जी, आपके बेटे की कुंवारी गांड का उद्घाटन रजत और मेरे लंड से होना था देखिये. बड़ा प्यारा बेटा है आपका. अब देखिये उसे कैसा सुख देते हैं आज" और हचक हचक कर मेरी गांड चोदने लगे.

जीजाजी उठकर कुर्सी की पीठ पकड़कर खड़े हो गये. मैं जीजाजी के चूतड़ पकड़कर चोद रहा था और जेठजी मन लगाकर मेरी गांड मार रहे थे. "साले मादरचोद, आज तेरी गांड को फ़ुकला कर दूंगा तेरी मां के भोसड़े जैसा. अरी ओ चुदैल रंडी मांजी, आपके बेटे की कैसी शामत करेंगे अब देखना, साले की गांड ऐसी खोल देंगे कि हाथ चला जायेगा." उत्तेजना से मेरे निपल मसलते हुए वे बोले.

गाली गलौज का दौर शुरू हो गया था. जीजाजी बोले "अरे साले, मार जोर से, तेरी दीदी की मैं रोज मारता हूं, आज देखूं तुझ में कितना दम है"

मैंने हांफ़ते हुए उनके चूतड़ों के बीच लंड पेलते हुए कहा "जीजाजी, आज आपको पता चलेगा गांड मराना क्या होता है, आपकी छिनाल अम्मा की कसम, आज आप की गांड इतनी गहरी चोदूंगा कि आपके मुंह से निकल आयेगा मेरा लंड"

उधर मां जो अब तक खामोश इस चुदाई का मजा ले रहे थी, इस नोंक झोंक में शामिल हो गयी "नीलिमा, आ, तेरी सास की चूत की गहरायी देखूं, बहुत बक बक करती है, मेरी बुर देखो, मैं एक साथ इनके दोनों चोदू बेटों को अंदर ले लूं पूरा. विनय बेटे, फ़ाड़ दे तेरी बहन के इस हरामी आदमी की गांड . और वो जो बक रहा है उसका भाई, उसके लंड को ऐसा निचोड़ अपनी गांड से कि साला कल उठ न पाये" नीलिमा भी मां की आवाज में आवाज मिला कर मुझे उकसा रही थी.

उधर अचलाजी चिल्ला चिल्ला कर अपने बेटों को प्रोत्साहित कर रही थीं. "इस लड़के का कचूमर निकाल दो बेटे, बच के वापस न जाने पाये. इसकी मां की बुर तो मैं आज ऐसी निचोड़ दूंगी कि फ़िर कभी इसमें रस नहीं आयेगा"

सब अब घमासान चोद रहे थे. परिवार सेक्स का असीम सुख सबको पागल कर रहा था. एक एक करके सब झड़े और लस्त होकर ढेर हो गये.

"मजा आ गया भई, बहुत दिनों में ऐसा मजा आया अम्मा, ये लड़का तो हीरा है अम्मा" जेठजी सुख में डूबे हुए बोले. "और इसकी मां रस की खान है अपनी बेटी जैसी, देखो, बुर से कितना पानी बह रहा है!" अचलाजी मां की बुर पर मुंह लगाकर बोलीं.

आराम करने के बाद आगे चुदाई शुरू हुई. बस अब जरा आराम से मजा लिया गया. हम तीनों मर्दों ने मिलकर सब औरतों को एक एक करके तीनो छेदों में एक साथ चोदा. मां की काफ़ी कुटाई हो चुकी था इसलिये उसे दस मिनिट बिना झड़े चोद कर हम दीदी पर टूट पड़े. दीदी को पहली बार तीन लंडों का सुख मिला. वह इतनी झड़ी कि सुख से एकदम ढीली हो गयी.

अचलाजी पहले ना नुकुर कर रही थीं, खास कर गांड मराने को. जेठजी नाराज हो गये "मां आज नखरा कर रही है, बरसों से हमसे मराती आ रही है, हम सब में बड़ा लंड तेरा है विनय, तू मार इसकी गांड"

(c) 2008, www.antarvasna.com

जबरदस्ती मैंने अचलाजी की पहाड़ सी गांड में लंड घुसेड़ा. उनके दोनों बेटे पहले ही उनकी चूत और मुंह में जगह बना चुके थे इसलिये बेचारी गों गों के सिवाय कुछ कर भी नहीं पायीं. लगता है उन्हें दुखा होगा क्योंकि जब भी मैं लंड उनकी गांड में पेलता, उनका शरीर ऐंठ सा जाता. पर मजा भी उन्होंने लिया, खूब चूतड़ उछाल उछाल कर चुदवाया और गांड मरायी.

इस मस्तानी रात की निरंतर चुदाई से सब इतने थक गये थे कि सो कर सब देर से उठे. अचलाजी ने दूसरे दिन और रात का सेक्स बंद कर दिया. बोलीं कि बहुत हो गया, अब जरा एक दिन आराम करके दूसरे दिन से जरा मन लगाकर चुदाई करेंगे, ऐसे जानवरों जैसे नहीं.

चौबीस घंटे के आराम से हम फ़िर ताजे तवाने हो गये थे. सुबह उठने के बाद नहा धो कर जब मैं और मां वापस आये तो हमे पकड़कर अलग अलग कमरे में ले जाया गया. दीदी और जीजाजी ने मुझे पकड़ा था और अचलाजी और जेठजी ने मां को.

मां बोली "अरे ये क्या कर रहे हो? और मेरे बेटे और मुझे ऐसे अलग अलग कमरे में क्यों ले जा रहे हो?"

जेठजी बोले "वो इसलिये मांजी कि गाय को दुहने के पहले खूंटे से बांध दिया जाता है. वैसे ही आज आप को बांध कर दुहा जायेगा" और वे कमरे के अंदर मां को ले गये.

मुझे दूसरे कमरे में ले जाकर जीजाजी ने पलंग पर लिटा दिया. दीदी ने मुझे नंगा करके मेरे हाथ पैर पलंग के चारों कोने में बांध दिये. मैं अब थोड़ा घबरा गया था. पर दीदी जिस तरह से शैतानी से हंस रही थी, मैं समझ गया कि ये लोगे कोई कामुक खेल खेलने वाले होंगे मेरे और मां के साथ. मैंने फ़िर दीदी से पूछा.

दीदी बोली "अरे ये यहां की प्रथा है, मैं जब आई थी नई घर में तब ऐसा ही हुआ था. असल में ये लोग तुम्हें और मां को मन भर कर हर तरह से भोगना चाहते हैं, वो भी एक एक करके अकेले में. अब सब अलग अलग काम में होते हैं, कोई आफ़िस, कोई घर का काम. इसलिये तुम दोनों को ऐसे तैयार करके बांध दिया है. जब जिसका जी चाहेगा और जिसके पास जैसा समय होगा, तुम लोगों को चोद जाया करेगा."

जीजाजी मेरे शरीर को प्यार से सहलाते हुए बोले "तेरी दीदी को हमने ऐसे ही हफ़्ते भर कमरे में बंद रखा था. खाना पीना भी वहीं होता था. रतन भैया एकदम सुबह आफ़िस जाते थे, सुबह दस बजे मैं चोद कर आफ़िस जाता था, फ़िर मां चढ़ती थी अपनी लाड़ली बहू पर और शाम को वापस आकर रतन चोदता था. इसे एक मिनिट को खाली नहीं रखते थे, इसकी मादक जवानी को पूरे दिन चखते थे, रात को सब मिल बांट कर खाते थे, वैसा ही कुछ तुम्हारे और मां के साथ अब होगा दो तीन दिन"

"पर मुझे बांध क्यों दिया जीजाजी?"

"अरे नहीं तो मुठ्ठ मार लोगे, मुझे मालूम है क्या हाल होता है, पागल हो जाती थी मैं चुदासी से. तेरे झड़ने पर अब हमारा कंट्रोल रहेगा भैया. अरे टुकुर टुकुर क्या देख रहे हो, अब जन्नत का मजा लोगे तुम दोनों! खासकर मां को तो आज मैं और सासूजी देखेंगे प्यार से. बीच बीच में तुझे देख जाया करेंगे. वैसे ये मेरे पति और जेठजी तुम्हारा खयाल रखेंगे." दीदी मेरे लंड को मुठियाते हुए बोली. फ़िर जीजाजी से बोली "चलो, पहला नंबर किसका है?"

जीजाजी बोले "मैं नहाने जा रहा हूं, आकर पहले जरा मांजी की बुर का प्रसाद लूंगा फ़िर अपने प्यारे साले से इश्क फ़रमाऊंगा. अभी भैया चढ़े होंगे मांजी पर. तब तक नीलिमा, तू मजा कर ले अपने भाई के साथ, फ़िर दिन भर मौका मिले न मिले"

(c) 2008, www.antarvasna.com

जीजाजी जाते ही नीलिमा दीदी मुझपर चढ़ कर चोदने लगी. मन भर कर उसने मुझे चुदाया पर झड़ाया नहीं. मैंने बहुत कहा, मुझसे यह सुख सहन नहीं हो रहा था. दीदी कान को हाथ लगाकर बोली "नहीं बाबा, मुझे डांट नहीं खानी, आज तेरे लंड की चाबी रजत और रतनजी के हाथ में है. मांजी भी नहीं झड़ाएंगी तुझको, हां चूत का रस पिला देती हूं"

नीलिमा दीदी के जाने के बाद कुछ देर बाद जीजाजी वापस आये. सीधे मेरे लंड पर ही बैठ गये. अपनी गांड में उसे घुसाते हुए बोले "विनय, आज मैं मन भर कर मराऊंगा तुझसे, कल सब के साथ जल्दी में मजा आया पर मन नहीं भरा."

बहुत देर तक मेरे लंड से वे मरवाते रहे. ऊपर नीचे होकर, कभी हौले हौले, कभी हचक हचक कर. अपने लंड को पकड़कर वे मुठिया रहे थे. मैं सुख से तड़प रहा था. लंड में मीठी अगन हो रही थी. मन भर कर मरा कर वे जब उतरे तो मैंने कहा "जीजाजी, ऐसे सूखे मत छोड़ो, कम से कम मेरी ही गांड मार लो, कूछ तो राहत मिले"

वे बोले "यार मैं जरूर मारता, पर रतन ने नहीं कहा है. तेरी गांड बहुत मस्त है, भैया तो आशिक हो गये हैं उसपर. वे अभी आयेंगे तब मारेंगे. हां, तेरी मलाई मैं जरूर चखूंगा और तुझे अपनी चखाऊंगा." वे मेरे ऊपर उलटे लेट गये और मेरे मुंह में अपना लंड दे दिया. मेरे लंड को चूसते हुए वे मेरे मुंह को चोदने लगे.

उनके उस खूबसूरत लंड को चूसने में में ऐसा जुटा कि उन्हें झड़ा कर ही दम लिया. उन्होंने भी मुझे झड़ाया और बूंद बूंद वीर्य निगल गये. कुछ देर वे सुस्ताते हुए मेरे ऊपर पड़े रहे, मुझे चूमते रहे और मेरे निपलों से खेलते रहे. "विनय, तू आया है तो घर में बहार आ गयी है. अब आ रहा है मजा असली सेक्स का. तीन औरतें और तीन आदमी, हर उमर के. तुझे तो हम अब जाने ही नहीं देंगे, यहीं रहना हमारे पास"

जब मेरा लंड खड़ा होने लगा तो वे उठ कर चले गये "मां को भेजता हूं तेरे पास, वो तुझे भैया के लिये तैयार करेगी. भैया तेरी मां को चोद कर आयेंगे पर बिना झड़े. आज उन्होंने अपना लंड सिर्फ़ तेरे लिये बचा कर रखा है"

कुछ देर बाद अचलाजी आयीं. आते ही पहले तो अपनी चूंची मेरे मुंह में ठूंस दी. "बेटे, ले चूस, तू बहुत मन लगाकर चूसता है. मैं तेरी मां की चूस रही थी उसे बांधने के बाद. अपनी बुर चखाई और खूब गरम किया उसे, बेचारी रोने को आ गयी थी, सुख से तड़प रही थी. फ़िर जब रतन आया तब मैंने उसे छोड़ा. रतन अभी उसे चोद रहा होगा. बहू भी साथ में है, तेरी मां को बुर चुसवा रही है."

फ़िर वे मुझपर चढ़ कर चोदने लगीं. "तेरे लंड से चुदवा कर जो सुकून मिलता है बेटे वह बहुत दिन नसीब नहीं हुआ. सच बता रतन और रजत के साथ कल मजा आया या नहीं?"

मैंने कमर हिलाकर नीचे से चोदते हुए कहा "हां मांजी, मुझे मालूम नहीं थी कि गांड मराने में इतना मजा आता है. और लंड का स्वाद, अब तक ऐसा स्वाद नहीं लिया मैंने. जीजाजी की गांड मारने में भी बहुत मजा आया. रतनजी की नहीं मार पाया, उनकी भी बड़ी मस्त होगी, इतने हट्टे कट्टे गठीले चूतड़ हैं"

"अरे रजत की तो बचपन से मारता है रतन. उसकी सच में अच्छी है, लड़कियों जैसी गोरी गोरी. तेरी भी कम नहीं है, बल्कि और जवान और रसीली है. रतन की मार लेना आज रात, वह प्यार से मरवायेगा तुझसे, उसका एक खास आसन है, तुझे अभी पता चल जायेगा."

दो तीन बार झड़कर वे मेरे मुंह पर बैठ गयीं. "बड़ी मेहनत की है तेरे लंड ने, खूब पानी निकाला है मेरी चूत से. ले अपनी मेहनत का फ़ल चख ले, फ़िर मैं जाती हूं. तेरा लंड भी अब फ़िर कैसा मचल रहा है देख, रतन ने मुझसे कहा था कि जब तक मैं विनय के पास पहुंचूं, उसका लंड सलाम में तना होना चाहिये"

(c) 2008, www.antarvasna.com

आधे घंटे मैं वैसे ही पड़ा था. फ़िर से लंड सनसना रहा था और बहुत तकलीफ़ दे रहा था. लगता था कोई भी आये और किसी भी तरह से मुझे चोद जाये.

आखिर रतनजी अंदर आये. उनके नंगे कसे मजबूत जिस्म को देखकर आज मुझे और उत्तेजना हुई, मैं उनकी राह देख रहा था जैसे कोई औरत या मर्द अपने प्रेमी या प्रेमिका की देखते हैं. उनका लंड आज इस जोर से खड़ा था कि पेट से सट गया था. फ़ूल कर मूसल जैसा लग रहा था.

वे मेरे पास आये और मुझे चूम कर बोले "विनय, मां ने बहुत प्यार से तैयार किया है तुझे, जैसा मैं चाहता था. अब बोल, कैसे लेगा मेरा? और कैसे देगा मुझे? वैसे तेरे इस लंड को तो मैं चूसूंगा अपना इश्क खतम होने के बाद" झुक कर वे मेरे निपल चूसने लगे. उनका एक हाथ अपने लंड को मुठिया रहा था और एक मेरे लंड को मस्त कर रहा था.

मैंने सिहरकर कहा "जेठजी, आपकी गांड मारने का मन करता है"

"उसके लिये तुझे खोलना पड़ेगा. वो मैं नहीं खोलूंगा. आज दिन भर तू ऐसा ही हमारा खिलौना है. रात को मार लेना. अभी मैं तेरी मारता हूं. कल जल्दी में ठीक से नहीं मार पाया. आज घंटे भर चोदूंगा तुझे, बिलकुल औरत मर्द वाली स्टाइल में. चल तैयार हो जा" कहकर उन्होंने मेरे पैर खोल दिये. हाथ वैसे ही बंधे थे.

मेरे पैर उठाकर उन्होंने मोड़ कर मेरे कंधे से टिका दिये. कुछ कुछ वैसे जैसे औरतों के करते हैं चोदते समय. पैरों को उन्होंने मेरे पीछे पलंग के सिरहाने बांध दिया. "ठीक है ना, तकलीफ़ तो नहीं हो रही है?" प्यार से उन्होंने पूछा.

मुझे थोड़ी तकलीफ़ जरूर थी पर ऐसी नहीं कि दर्द हो. मैंने सिर हिलाया. मेरे गांड अब पूरी खुली थी, उनके सामने ऐसे पेश थी जैसे कोई दावत हो. वे पलंग पर चढ़ कर मेरी गांड के पास घुटने टेक कर बैठे और मेरे गुदा पर लंड रखकर पेलने लगे. बिलकुल ऐसा लग रहा था जैसे मैं औरत हूं और वे मेरी चूत में लंड घुसेड़ रहे हैं.

आज मुझे काफ़ी दुखा. एक टीस उठी जब उनका सुपाड़ा अंदर गया. मेरी सीत्कारियों पर आज उन्होंने ज्यादा ध्यान नहीं दिया, बस लंड पेलते रहे. उनके उस लोहे जैसे लंड के आगे मेरे चूतड़ क्या टिकते, जल्द ही उनकी झांटें मेरे नितंबों पर आ टकरायीं, उनका लंड जड़ तक मेरी गांड में समा गया था.

मेरे लंड को सहलाते हुए वे कुछ देर बैठे रहे और फ़िर झुक कर मुझपर लेट गये. मुझे बांहों में भरके उन्होंने मेरा गहरा चुंबन लिया और बोले "आज राहत मिली है मेरे राजा, जब से तुझे देखा है, यही सोच रहा हूं कि कब तू मेरे नीचे होगा! रजत की मैं ऐसे ही मारता हूं, देखना अब तुझे किस जन्नत में ले जाता हूं"

मुझे चूमते हुए वे मेरी गांड चोदने लगे. पकापक पकापक उनका लौड़ा मेरी गांड में अंदर बाहर होने लगा. पहले मुझे काफ़ी दर्द हुआ पर मेरी हल्की सिसकियों को उन्होंने अपने मुंह में दबा लिया. मेरा लंड तन कर मेरे और उनके पेट के बीच दबा हुआ था. घिसने से मजा आ रहा था. दो मिनिट में मैं ऐसा मस्त हुआ कि उनके होंठों को चूसता हुआ कमर हिलाकर चूतड़ उछालने लगा कि उनके लंड को और गहरा अंदर लूं.

वे मुस्कराये और बोले "मजा आरहा है ना? यह आसन गांड मारने के लिये सबसे अच्छा है, औरतों की भी ऐसे मार सकते हैं. तू मां की मार कर देखना, चुम्मा लेते हुए ऐसे सामने से गांड मारने में जो मस्ती मिलती है वो पीछे से मारने में नहीं"

बहुत देर जेठजी ने मेरी मारी. मैं आधी बेहोशी आधी उत्तेजना की मदहोश स्थिति में था. हाथ बंधे थे नहीं तो ऐसा लग रहा था कि उन्हें बांहों में भींच लूं. पर रतनजी ने खोलने से मना कर दिया "यार, मैं जब तक चाहूं तेरी

(c) 2008, www.antarvasna.com

मार सकता हूं, तू चिपटेगा तो जल्दी झड़ा देगा मुझे''

लंबी चुदाई के बाद वे जब झड़े तो आनंद से उनके मुंह से हिचकी निकल आयी. मैं लगा हुआ था, मेरा लंड ऐसा तना था कि मुझे चुप नहीं बैठने दे रहा था. पर उनका लंड सिकुड़ कर मेरी गांड से निकल आया. अब मैं कुछ बोल भी नहीं पा रहा था, बस उनकी ओर कातर दृष्टि से देख रहा था कि मुझे मुक्ति दें.

रतनजी ने आखिर मेरा लंड चूसा और मुझे राहत दी. मैं ऐसा झड़ा कि लस्त हो गया. समलिंगी सेक्स में इतना सुख हो सकता है ये आज मुझे पहली बार पता चला.

मुझे चूम कर रतनजी आफ़िस चले गये. बहुत तृप्त लग रहे थे. उनके जाने के बाद मैं सो गया. दो घंटे बाद दीदी ने आकर खाना खिलाया. दीदी और अचलाजी एक एक बार और मुझे भोगने आयीं. दोपहर बाद उन्होंने मुझे छोड़ा. मैं फ़िर ऐसा सोया कि शाम को ही उठा.

मां को देखा तो वह ऐसे चल रही थी जैसे नींद में हो. उसका चेहरा एक असीम सुख से तमतमाया हुआ था. उसे भी सब ने दोपहर भर खूब निचोड़ा था ये लगता है.

उस रात हमने ज्यादा चुदाई नहीं की. सब काफ़ी तृप्त थे. पर वायदे के अनुसार उसी आसन में रतनजी ने एक बार मुझसे गांड मरायी. उनकी गांड एकदम टाइट थी, मेरे लंड को ऐसे पकड़ते थी जैसे घूंसे में पकड़ा हो. मैंने कहा भी.

''अरे आज तक इतना बड़ा लंड भी कहां लिया है भैया ने, मेरा ही तो लिया है, गांड टाइट होगी ही'' जीजाजी बोले.

रतनजी पर सामने से चढ़ कर प्यार करते हुए चूमते हुए मैंने खूब चोदा. मजा आ गया. यह आसन मैंने बाद में दीदी और मां पर भी आजमाया. गांड मारने या मराने के लिये अब मैं अक्सर यही आसन इस्तेमाल करता हूं.

दो दिन और मुझे और मां को इसी तरह दिन में बांध कर रखा गया. जो जैसा समय मिलता आकर चोद जाता. रतनजी तो एक बार आफ़िस से सिर्फ़ मुझपर चढ़ने को बीच में वापस आये और फ़टाफ़ट चोद कर चले गये. जीजाजी की कृपा अब मां पर ज्यादा रही.

धीरे धीरे हम चुदाई के एक अटूट बंधन में बंध गये. दोनों परिवार ऐसे बंधे कि अलग होना मुश्किल हो गया. किसकी किस से शादी हुई है, कौन औरत है कौन मर्द, कौन बड़ा है कौन छोटा, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था. जैसा जिसे अच्छा लगे, चढ़ जाता था.

अचलाजी के आग्रह पर मैं और मां अपना घर बंद करके दीदी के यहां हमेशा को रहने आ गये. मुझे वहीं के एक कालेज में एडमिशन मिल गया.

एक दिन रतनजी ने कहा ''चलो, अब कहीं घूम आते हैं. दार्जीलिंग चलते हैं. हफ़्ते भर रहेंगे. यहां बहुत चुदाई हो चुकी, सब थक भी गये हैं. तीन चार दिन आराम कर लो, फ़िर मैं बूकिंग कर देता हूं.''

अचलाजी बोलीं ''पर बेटे, रहेंगे कहां, किसी होटल में इतना बड़ा कमरा नहीं होता कि हम सब उसमें आ जायें''

रतनजी बोले ''कौन कहता है कि एक कमरे में रहेंगे? हम तो एक फ़ाइव स्टार होटल में तीन कमरे लेकर रहेंगे.''

दीदी बोली ''तो साथ चुदाई का क्या होगा?''

(c) 2008, www.antarvasna.com

अचलाजी सुन रही थीं. मुस्करा कर बोलीं "मुझे मालूम है मेरे बेटे के मन में क्या है, साथ चुदाई बहुत हो गयी, आगे भी होगी जब हम वापस आयेंगे. अभी छुट्टी में हम जोड़ियां बनाकर अलग कमरों में रहेंगे"

मां बोली "पर दीदी, कैसी जोड़ियां बनेंगी?"

जेठजी बोले "सब तरह की जोड़ियां बनेंगी. हम छह लोग हैं, हमारी पंद्रह तरह से जोड़ियां बन सकती हैं, तीन कमरे ले लेंगे, हर जोड़ी के लिये एक, पांच दिन में सब तरह की जोड़ियां बन जायेंगीं. मजा आयेगा. हर रात एक अलग पार्टनर. मन लगाकर उसके साथ जो मन में आये, कर सकते हैं. मेरे भी मन में बहुत कुछ है, करने को और करवाने को जो सब के सामने करने में झिझक होती है, जोड़ी बना कर हम मनचाहा काम कर सकते हैं" वे मेरी ओर प्यार से देख रहे थें, साथ ही साथ उनकी नजर मां ओर भी थी. मैंने जीजाजी की ओर देखा. मन में सोच रहा था कि कैसी जोड़ियां बनेंगीं और उनमें किस जोड़ी में खास मजा आयेगा!

अचलाजी मां की ओर और दीदी की ओर देखते हुए बोलीं "बिलकुल ठीक है बेटे, मैं भी कुछ कुछ करना चाहता हूं"

"तो तय रहा. अब सब अलग अलग सोना शुरू कर दो, अपनी बैटरी चार्ज कर लो. और हां, सोच लो किस के साथ क्या करना है, यही मौका है, मन की हर मुराद पूरी कर लेने का प्राइवेसी में, मन को पिंजरे से निकाल कर खुला उड़ने का मौका देने का!" रतनजी ने मेरे चूतड़ों पर चपत मार कर कहा. मुझपर वे खास मेहरबान थे.

सब एक दूसरे की ओर देख कर मुस्करा रहे थे. सब को बात जंच गयी थी. आंखों में झलकती कामना से यह साफ़ था कि सभी मन ही मन में सोचने लगे थे कि क्या करना है.

रतनजी ने अचलाजी से कहा "अम्मा, वापस आकर भी हम रोज जोड़ियां बना कर सोया करेंगे, चार बड़े कमरे हैं, किसी को कोई तकलीफ़ नहीं होगी. जोड़ियां जितनी बार चाहे बदली जा सकती हैं. बस शनिवार रविवार को मिलकर हम सामूहिक प्रेमालाप करेंगे. ठीक है ना"

सब ने हां कहा. हमारे परिवार प्रेम का एक नया अध्याय शुरू हो रहा था.

––– समाप्त –––

Note: At this point, the author gives up and asks the readers to imagine what these six horny men, women and teenager will do with each other in private. Author's renedering can never match reader's own imagination.

(c) 2008, www.antarvasna.com